Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 28 • अंक 03 • 19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 17-10-2026 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

भिक्षु वाणी

एक नर पंडित प्रवीण,
एकण ने अखर ना चढ़े।

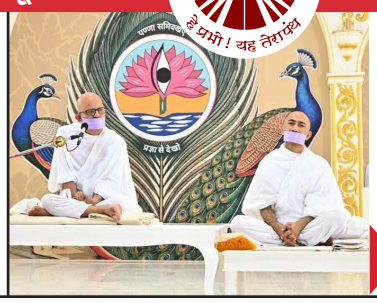
एक आदमी पण्डित और प्रवीण है। एक ऐसा है जो अक्षर भी याद नहीं कर पाता।

– आचार्यश्री भिक्षु



काया की स्थिरता ही ध्यान का पहला द्वार : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



ज्ञान के साथ संस्कारों की शिक्षा ही बनाती है जीवन को श्रेष्ठ' : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 20

Address Here

पूज्य प्रवर ने 'भक्त प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा' विषय दिया ओजस्वी सम्बोधन

'स्वर्ग की चाह नहीं, मोक्ष की राह ही संथारे का सच्चा मर्म' : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य श्री ने धर्मसंघ के विशिष्ट मुनि 'संघ परामर्शक' मुनि मधुकरजी स्वामी की पुण्यतिथि पर श्रद्धा-सुमन किए अर्पित

लाडनूं।
12 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी पावन वाणी से चतुर्विध धर्मसंघ में आध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाहित कर रहे हैं। मुख्य मंगल प्रवचन में गुरुदेव ने नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम संपन्न करवाया। तत्पश्चात् निर्धारित विषय 'भक्त प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' पर आगम के माध्यम से अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को सम्बोधित किया।

अनशन का स्वरूप, भेद एवं 'भक्त प्रत्याख्यान' का महिमामंडन–

१. अनशन के प्रकार व मरण समाधि : आचार्यश्री ने फरमाया कि भक्त प्रत्याख्यान का अर्थ है आहार का प्रत्याख्यान कर देना। भोजन की आवश्यकता साधुओं और गृहस्थों दोनों को ही होती है, परन्तु साधु और गृहस्थ दोनों ही भक्त प्रत्याख्यान करते हैं। हमारे धर्मसंघ के आद्य आचार्यश्री भिक्षु ने अनशनपूर्वक पंडित मरण को प्राप्त किया था। जैन शासन में अनशन का विशेष महत्त्व है। अनशन दो प्रकार का होता है—

१. इत्वरिक (अर्थात् निश्चित समय के लिए) और २. यावत्कथित (अर्थात् जीवनभर के लिए)।

२. जीवन भर के अनशन के तीन प्रकार व उनकी श्रेणियाँ: जीवनभर के अनशन के तीन प्रकार बतलाए गए हैं—भक्त प्रत्याख्यान, इंगिनीमरण और पादोपगमन। इनमें यदि भक्त प्रत्याख्यान को विशिष्ट मान लें तो इंगिनी मरण विशिष्टतर और पादोपगमन विशिष्टतम अनशन होता है। प्रायोपगमन अथवा पादोपगमन में साधक निश्चेष्ट होकर स्थित हो जाता है, यह बहुत उच्च कोटि का अनशन है।

३. भव भ्रमण का परिसीमन : शास्त्र में भक्त प्रत्याख्यान का आश्चर्यकारी लाभ बताया गया है कि यह सैकड़ों भवों का निरोध कर देता है। (शेष पेज 18 पर)

> गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी अधिक से अधिक त्याग-प्रत्याख्यान करना चाहिए तथा परिग्रह, चोरी और असत्य का संभव हो सके त्याग करने का प्रयास करें
>
> –आचार्यश्री महाश्रमण



"निष्काम साधना, अनन्य सेवा और अक्षुण्ण गुरु-भक्ति के अमर प्रतीक: 'शासनगौरव' मुनिश्री मधुकरजी स्वामी":

आश्विन शुक्ला द्वितीया : स्मरण का दिवस : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने पावन प्रवचन में फरमाया कि आश्विन शुक्ला द्वितीया का यह दिवस 'शासनगौरव' मुनिश्री मधुकरजी स्वामी के काल-धर्म की 18वीं वार्षिक पुण्यतिथि का है। इस अवसर पर संघ के प्रति उनके अप्रतिम योगदान और महान अवदानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

गुरु-सेवा का असाधारण और सूक्ष्म समर्पण : मुनिश्री मधुकरजी ने युगद्दष्टा आचार्यश्री तुलसी के सानिध्य में रहकर वर्षों तक ऐसी निष्काम और निस्पृह सेवा की, जिसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। उनके सेवा-दायित्वों का दायरा अत्यंत व्यापक और सूक्ष्म था–

1. **प्रतिलेखन और बौद्धिक सहयोग:** गुरुदेव के पवित्र प्रतिलेखन कार्यों में पूरी तल्लीनता से सहयोग करना।
2. **गोचरी व पंचमी समिति प्रबंधन :** पंचमी समिति में साथ रहकर पात्रों की देखभाल और गोचरी से जुड़ी तमाम व्यवस्थाओं को बेहद कुशलता से संभालना।
3. **चिकित्सा और स्वास्थ्य का रिकॉर्ड :** गुरुदेव के स्वास्थ्य और चिकित्सा संबंधी रिकॉर्ड (डायरी) को अत्यंत सटीकता और गोपनीयता के साथ सहेजना।
4. **व्यक्तिगत व रात्रि परिचर्या :** सुबह-शाम शारीरिक सेवा (जैसे मालिश आदि) तो करना ही, साथ ही रात्रि के समय भी गुरुदेव के समीप रहकर उनकी हर आवश्यकता के लिए तत्पर रहना।

द्विविध आचार्यों की सान्निध्य-सेवा का दुर्लभ सौभाग्य: मुनिश्री मधुकरजी का जीवन इस बात का प्रतीक है कि निष्काम सेवा करने वाले संतों पर गुरुओं की असीम कृपा बरसती है। उन्हें न केवल आचार्यश्री तुलसी की लंबी सेवा का सौभाग्य मिला, बल्कि उनके महाप्रयाण के पश्चात आचार्यश्री महाप्रज्ञ को भी आहार कराने और उनकी सेवा करने का अप्रतिम अवसर प्राप्त हुआ। दो युग-प्रवर्तक आचार्यों के सानिध्य में ऐसी सेवा का सुयोग उनके महान व्यक्तित्व को और ऊँचाई देता है।

'संघ परामर्शक' से लेकर 'शासन गौरव' तक का मान:

"मुनिश्री के इस अप्रतिम सेवा-समर्पण और शासन-निष्ठा के प्रति गहरा बहुमान व्यक्त करते हुए"–

- **आचार्यश्री तुलसी ने उन्हें 'संघ परामर्शक' के गरिमापूर्ण पद से अलंकृत किया।**
- **तत्पश्चात, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उनके सेवा-कार्यों और शासन के प्रति अद्वितीय योगदान को देखते हुए उन्हें 'शासन गौरव' के उच्च अलंकरण से सम्मानित किया।**

नवदीक्षित संतों के प्रेरणा-स्रोत: मुनिश्री मधुकरजी स्वामी केवल सेवा की मूरत नहीं थे, बल्कि वे अनुशासन और प्रशिक्षण के जीवंत विद्यालय थे। उनके सानिध्य में कई नवदीक्षित संतों को संघ के उच्च संस्कारों, कार्यकुशलता और सेवा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। उनका मृदुतामय व्यवहार और हर परिस्थिति में स्थितप्रज्ञ रहना सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा।

"शारद के चंद्र-सी सौम्यता और गुरु-चरणों में सर्वस्व अर्पण करने वाले 'शासनगौरव' मुनिवर श्री मधुकरजी स्वामी के प्रति पूज्य आचार्यप्रवर की वाणी से प्रस्रवित यह मंगल आशंसात्मक रसाग्र काव्य-पुष्प" :

मुनिवर मधुकर स्वाम गण में गौरव पाया जी।
कविवर मन अभिराम गुरुवर रे मन भाया जी।।

संघ परामर्शक संबोधन गुरु तुलसी मुख उक्त।
महाप्रज्ञ गुरु दत्त विभूषण शासनगौरव युकत।।1।।

खूब करी गुरुवर री सेवा अर्पित तन मन प्राण।
गुरु सेवा ने जप-तप मान्यो निज कर्तव्य सुजाण।।2।।

नवदीक्षित संतां री सेवा विपुल करी दिनरात।
सुसंस्कार भर्या जीवन में कांई बताऊं बात।।3।।

मृदुतामय व्यवहार कुशलता आकर्षण रो केन्द्र।
हंसतो-खिलतो गमतो चेहरो ज्यूं शारद रो चन्द्र।।4।।

स्थितप्रज्ञ रह करो निरंतर शांतसुधारस पान।
'महाश्रमण' मंगल आशंसामय म्हारो संगान।।5।।

लय – मांड....

"न कोई खड़को, न कोई आवाज़... गुरुदेव तुलसी रे विश्राम में कुण बाँध दी छाना-माना पट्टी?"'

बहुश्रुत मुनिश्री दिनेशकुमार जी ने सवाई माधोपुर प्रवास का एक अत्यंत प्रेरक संस्मरण साझा करते हुए मुनिश्री मधुकर जी स्वामी की निस्वार्थ सेवा-निष्ठा, सूझबूझ और अनन्य गुरु-भक्ति को रेखांकित किया।

1. **सवाई माधोपुर का प्रसंग :** गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के पैर में चोट लगी थी और पट्टी करना आवश्यक था। दोपहर के आहार के बाद जब गुरुदेव विश्राम कर रहे थे, तब मुनि श्री मधुकर जी अत्यंत शांति और कुशलता से वहाँ पहुँचे। उन्होंने इतनी सहजता से पट्टी की कि गुरुदेव को विश्राम के दौरान इसका आभास तक नहीं हुआ।
2. **गुरुदेव तुलसी का आश्चर्य :** जब गुरुदेव की नींद खुली और पैर पर बँधी पट्टी देखी, तो वे आश्चर्यचकित रह गए। पूछने पर जब पता चला कि यह कार्य मुनि मधुकर जी का है, तो गुरुदेव उनकी मौन, चतुर और निष्काम सेवा-भावना से अभिभूत हो उठे।
3. **आचार्य महाश्रमण जी के साथ दीक्षा-काल के स्मृति-शेष :** मुनि दिनेशकुमार जी ने अपने दीक्षा-काल को याद करते हुए बताया कि दीक्षा लेते ही उन्हें मुनि मधुकर जी के उसी वर्ग (ग्रुप) में रहने का दुर्लभ सुयोग मिला, जिसके एक सदस्य स्वयं वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी भी थे। (शेष पेज 18 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

'शरीर प्रत्याख्यान' और सुखी जीवन के मूलमंत्र पर पूज्यप्रवर की पावन प्रेरणा

'समता की भावना से ही सधता है शांतिमय और आनंदमय जीवन' : आचार्यश्री महाश्रमण

5 शरीरों में औदारिक शरीर ही है केवलज्ञान और मोक्ष का साधन

लाडनूं।
10 अक्टूबर, 2026

जैन विश्व भारती, लाडनूँ में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में निर्धारित विषय 'शरीर प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा' पर आगमिक विवेचन करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को सम्बोधित किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अनंत काल की भवभ्रमण यात्रा में शरीर हमेशा आत्मा के साथ रहता है। जैन तत्त्व विद्या में औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण— ये पाँच प्रकार के शरीर बतलाए गए हैं।

पाँचों शरीरों की विशिष्टता और कार्मण की सूक्ष्मता–

१. कार्मण व औदारिक की भूमिका : आचार्यश्री ने फरमाया कि कार्मण शरीर सबसे सूक्ष्मतर और कर्म का शरीर है, जो जीव को संसार में भ्रमण कराता है। जब आत्मा स्व-स्वरूप में लीन होती है, तब इस पर कार्मण का वश नहीं चलता। केवल औदारिक शरीर की उपस्थिति में ही केवलज्ञान और केवलदर्शन की प्राप्ति सम्भव है, इसलिए यह उदार व विशिष्ट है।

२. आहारक शरीर का प्रयोजन: संज्ञी मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे पाँचों शरीर प्राप्त हो सकते हैं। आहारक शरीर केवल विशेष योग्य एवं लब्धिसम्पन्न साधु को ही प्राप्त होता है, जो शंका समाधान के लिए दूत की भाँति केवली के पास जाकर उत्तर लाता है।



'ओम' (ॐ) की जैन व्याकरणिक व्याख्या : जानिए 5 पदों से कैसे सिद्ध होता है यह मंत्र!

पूज्य प्रवर ने 'ओम' (ॐ) शब्द की जैन दर्शन एवं संस्कृत व्याकरण के आधार पर अति सूक्ष्म और दार्शनिक व्याख्या फरमाई। उन्होंने स्पष्ट किया कि 'ओम' कोई सामान्य ध्वनि नहीं, बल्कि नमस्कार महामंत्र के पंच परमेष्ठी के प्रथम अक्षरों से सिद्ध हुआ परम मंगलकारी शब्द है।

1. पंच परमेष्ठी के 5 पदों का योग: आचार्य श्री ने बताया कि शब्द पंच परमेष्ठी के पावन पदों के प्रथम अक्षरों के मेल से बनता है:

अ — अरहत
अ — अशरीरी (सिद्ध भगवान)
आ — आचार्य
उ — उपाध्याय
म — मुनि

2. संस्कृत व्याकरण से शब्द की पूर्ण निष्पत्ति : आचार्य श्री ने संधि के नियमों का उदाहरण देते हुए इसकी रचना समझाई: अरहत का 'अ' + सिद्ध (अशरीरी) का 'अ' मिलकर बनता है — 'आ'। यह 'आ' + आचार्य का 'आ' मिलकर 'आ' ही रहता है। इसमें उपाध्याय का 'उ' जोड़ने पर (आ + उ) बनता है — 'ओ'। अंत में मुनि का आधा 'म' जुड़ने पर यह पूर्ण 'ओम' (ॐ) शब्द सिद्ध होता है।

3. अशरीरी सिद्ध एवं मंगलकारी स्वरूप: आचार्य श्री ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि सिद्ध भगवान को 'अशरीरी' कहा गया है, क्योंकि वे कर्ममुक्ति के पश्चात पूर्णतः शरीर-रहित अवस्था में विराजमान हैं। जैन परंपरा में 'ओम' का यह स्वरूप ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति और जीवन के सर्व मंगल के लिए अत्यंत पावन माना गया है।

प्रत्याख्यान की श्रृंखला : कषाय, योग और शरीर–

१. सिद्धत्व का मार्ग : पूज्यश्री ने फरमाया कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए शरीर प्रत्याख्यान आवश्यक है, परन्तु उससे पूर्व कषाय और योग का प्रत्याख्यान अनिवार्य है। कषाय का पूर्ण क्षय १२वें गुणस्थान में होता है।

२. परम शाश्वत सुख : मनुष्य भव चरम भव है जिसमें ये तीनों कार्य सम्पन्न होते हैं। शास्त्रानुसार शरीर के पूर्ण प्रत्याख्यान से जीव सिद्ध गुणों को प्राप्त कर लोकाग्र में स्थित हो जाता है। यह सुख शाश्वत है और देवों व इन्द्रों के सुख से भी परे है।

चित्त समाधि और शांतिपूर्ण सहवास के ३ सूत्र–

१. उपादान की मजबूती : आचार्यप्रवर ने विहार कर आए साधु-संतों की चित्त समाधि के सन्दर्भ में फरमाया कि भाव शुद्धि और उपादान मजबूत हो, तो बाहरी परिस्थितियाँ समाधि भंग नहीं कर सकतीं।

२. दैनिक जीवन का पाथेय : पूज्यश्री ने शांतिपूर्ण सहवास और जीवन के लिए तीन मुख्य सूत्र दिए—

१. सहन करना, २. औचित्यपूर्ण कहना और ३. शांति से रहना।

३. मध्यस्थ भाव : यदि वर्तमान में पूर्ण परम सुख की प्राप्ति सम्भव न हो, तो भी समता भाव रखते हुए सुख-दुःख, लाभ-अलाभ में मध्यस्थ रहकर जीवन को शांतिमय, वैराग्यमय और आनंदमय बनाया जा सकता है।

'घर ने स्वर्ग बणावणो है? पढ़ लो आचार्य श्री रो यो मंतर!'

गृहस्थ परिवार हो या साधु-साध्वियों का संघ—आपसी शांति और सामंजस्य के लिए पूज्य प्रवर ने 'सहना, कहना और रहना' का अत्यंत व्यावहारिक सूत्र प्रदान किया है।

जीवन का त्रिसूत्री फार्मूला: आचार्य श्री ने इसे एक महत्वपूर्ण सूत्र के रूप में समझाया–

1. **सहना :** परिवार या संघ में सामंजस्य बनाए रखने के लिए थोड़ा सहन करना आवश्यक है। चाहे वह सास-बहू का संबंध हो या पिता-पुत्र का, असहिष्णुता ही विवादों का मूल कारण होती है।
2. **कहना :** केवल सहना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मौके पर उचित समय देखकर अपनी बात को शिष्टता और औचित्य के साथ कहना भी आवश्यक है।
3. **रहना :** अंत में, इन सबके बीच शांति से साथ रहना ही जीवन की सार्थकता है।

असहिष्णुता का दुष्प्रभाव और निभाव की महत्ता : आचार्य जी ने स्पष्ट किया कि वर्तमान समय में चाहे गृहस्थों के परिवार हों या साधु-साध्वियों का संघ, 'असहिष्णुता' ही अशांति की सबसे बड़ी जड़ है। इसे कम करना ही समाधान का मार्ग है।

निभाव की महत्ता : पूज्य प्रवर ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि परस्पर 'निभाव' (एक-दूसरे को साथ लेकर चलना) ही संघ और परिवार की व्यवस्था को सुचारु रखता है। किसी भी परिस्थिति में धैर्य और समता बनाए रखना ही शांतिपूर्ण सहवास की कुंजी है।

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'रोकें काया की चंचलता' विषय पर दिया पावन सम्बोधन

'काया की स्थिरता ही ध्यान का पहला द्वार' : आचार्यश्री महाश्रमण

अनुशासन पर्व पर चारित्रात्माओं ने उच्चरित किया संघ का लेखपत्र

लाडनूं।
09 अक्टूबर, 2026

जैन विश्व भारती, लाडनूँ की पावन धरा स्थित सुधर्मा सभा में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में अनुशासन पर्व एवं हाजरी के सुअवसर पर विशाल अध्यात्म-सभा आयोजित हुई।

> मन की चंचलता को कम करने के लिए साधक पहले शरीर की चंचलता को रोके; काया की स्थिरता ही ध्यान का आधार है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

पूज्यप्रवर ने 'रोकें काया की चंचलता' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान करते हुए संयम, विवेक और साधना की बारीकियों से अवगत कराया।



आठ प्रवचन माताएँ: प्रवृत्ति व निवृत्ति का संतुलन–

१. समिति व गुप्ति का आगमिक प्रयोजन : आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु की साधना-चर्या में पाँच महाव्रत तथा आठ प्रवचन माताएँ (पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ) मुख्य हैं। समितियाँ चारित्रिक प्रवृत्ति और सक्रियता का प्रतीक हैं, जबकि गुप्तियाँ अशुभ योगों को रोकने (निवृत्ति) का माध्यम हैं। साधु को २४ घंटे अशुभ विषयों से निवृत्त रहना चाहिए।

२. चौदहवें गुणस्थान में गुप्तियाँ : आचार्यप्रवर ने समझाया कि साधना के सर्वोच्च १४वें गुणस्थान में कोई समिति काम नहीं करती क्योंकि वहाँ प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है। अतः उस अवस्था में केवल तीन गुप्तियाँ— मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति ही विद्यमान रहती हैं।

काय की चंचलता और कायोत्सर्ग की महत्ता–

१. मन की एकाग्रता का मार्ग : पूज्यश्री ने फरमाया कि चंचलता मन, वाणी और शरीर तीनों की होती है।

(शेष पेज 18 पर)

पूज्य प्रवर ने 'सहाय प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा' विषय पर दिया ओजस्वी सम्बोधन

'सेवा लेने से पहले सेवा देने का भाव जगाएँ परावलंबी न बनें' : आचार्यश्री महाश्रमण

नवरात्र प्रारंभ होने के अवसर पर नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का विधिवत् शुभारंभ

लाडनूं।
11 अक्टूबर, 2026



जैन विश्व भारती, लाडनूँ में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में प्रवासित हैं। नवरात्रा प्रारंभ होने के अवसर पर नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का विधिवत् शुभारंभ हुआ। परम पूज्य गुरुदेव ने चतुर्विध धर्म संघ को आगम सूक्तों के सस्वर उच्चारण के साथ अनुष्ठान करवाया। तत्पश्चात् मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में निर्धारित विषय 'सहाय प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' पर उत्तराध्ययन आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को सम्बोधित किया।

साधना की दो पद्धतियाँ और सहाय प्रत्याख्यान का मर्म–

१. एकाकी व सामुदायिक साधना: आचार्यश्री ने फरमाया कि साधना की दो पद्धतियाँ रही हैं—एक एकाकी साधना और दूसरी सामुदायिक साधना। प्राचीन काल में दृढ़ संकल्पी और मनोबली मुनि गुरु की आज्ञा से अकेले विचरण करते हुए साधना करते थे, जिसमें किसी अन्य साधु की सेवा या सहयोग नहीं लेना होता था। इससे साधक अल्प शब्द, अल्प झंझा, अल्प कलह, अल्प कषाय, संवर और समाधि को प्राप्त होता था।

> परवश होना दुःख है और अपनी आत्मा के अनुशासन में रहना सुख है। जब तक राग नहीं छूटता है, केवलज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

२. तेरापंथ की पद्धति व स्वावलंबन : पूज्यप्रवर ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहा कि हमारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ में सामुदायिक एवं संघबद्ध साधना पद्धति है। संघ में रहते हुए भी 'सहाय प्रत्याख्यान' की भावना यह है कि साधक परावलंबी न बने। अपने दैनिक कार्य जैसे प्रतिलेखन, वस्त्र प्रक्षलन आदि स्वयं करे, दूसरों को परिश्रम न दे। संस्कृत सूक्ति का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि परवश होना दुःख है और अपनी आत्मा के अनुशासन में रहना ही सुख है। कार्य निर्जरा के उद्देश्य से करें, साधक कम से कम सेवा ले और अधिक से अधिक सेवा देने का भाव रखे।

साधना में राग की विवशता और केवलज्ञान में बाधा–

१. राग व मोक्ष का संबंध : पूज्यश्री ने साधना की सूक्ष्मता समझाते हुए फरमाया कि संघ में साथ रहने से कभी-कभी मोह या राग उत्पन्न हो सकता है। साधु संघ में रहते हुए भी अपने आप में एकाकी रहे, किसी से मोह न बाँधे।

२. गौतम स्वामी का दृष्टांत : आचार्यप्रवर ने उदाहरण देते हुए फरमाया कि जैसे गौतम स्वामी का भगवान महावीर के प्रति 'राग' ही उनके केवलज्ञान की प्राप्ति में बाधक बन गया था।

शिविरों का शुभारंभ, उपसंपदा और अतिथियों की उपस्थिति–

१. अनुष्ठान व उपसंपदा : पूज्य प्रवर की पावन सन्निधि में प्रेक्षाध्यान शिविर और सघन साधना शिविर के द्वितीय चरण का शुभारंभ हुआ। पूज्यप्रवर ने दोनों शिविरों के संभागियों को उपसंपदा प्रदान की।

२. विशिष्ट उपस्थिति व मंगल आशीर्वाद : इस अवसर पर भारत जैन महामंडल के पदाधिकारी उपस्थित हुए। अ. भा. खण्डेलवाल दिगंबर जैन सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के.सी. जैन, उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश के.के. तातेड़, भारत जैन महामंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष ख्याली लाल तातेड़ एवं महामंत्री बाबूलाल बाफना ने अपने विचार व्यक्त कर कृतज्ञता ज्ञापित की।

पूज्यप्रवर ने सभी को पावन मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

Attachment चाहे प्रभु से हो या पुत्र से... क्यों रुकी है मोक्ष की राह?'

('बाप के कांधे पर बेटे की अर्थी... और समता की परीक्षा!')

साधना के पथ पर अग्रसर साधक के मन में छिपा सूक्ष्म राग किस प्रकार 'केवल ज्ञान' में बाधक बनता है, इसे पूज्य गुरुदेव ने दो ऐतिहासिक दृष्टांतों और जीवन के एक कठोर यथार्थ से समझाया है–

1. गौतम स्वामी और प्रभु-मोह: भगवान महावीर के निर्वाण पर उनके प्रथम शिष्य गौतम स्वामी को गहरा वियोग हुआ। प्रभु का कथन था— 'गौतम! तुम्हारा मेरे साथ लंबे काल का संसर्ग और परिचय है, जो केवल ज्ञान में बाधक है।' जब गौतम स्वामी ने इस सूक्ष्म राग का पूर्ण त्याग किया, तब वे केवलज्ञानी बने।

2. आचार्य संयमभव और छिपा 'पुत्र-मोह' : आचार्य संयमभव के एक युवा शिष्य के देहावसान पर उनकी भावुकता देख संतों ने जिज्ञासा की। आचार्य श्री ने अनकहा रहस्य खोला— 'वह केवल मेरा शिष्य नहीं, मेरा पुत्र भी था। दीक्षा लेने के बाद भी वात्सल्य का वह सूक्ष्म राग हृदय के निकट छिपा रहा, जो वियोग के क्षणों में छलक आया।'

3. जीवन का यथार्थ और कर्म का अकाट्य योग प्रकृति का उल्टा क्रम: संसार का स्वाभाविक नियम है कि संतान बुजुर्गों की अर्थी उठाए। परंतु जब आयुष्य की अल्पता के कारण माता-पिता को अपने जवान बेटे या पोते की अर्थी देखनी पड़े, तो यह सांसारिक जीवन का सबसे असहनीय वज्राघात बन जाता है।

संयम की सच्ची कसौटी : 90-100 वर्ष की आयु में प्रियजन का जाना सह्य है, पर कच्ची उम्र में उठी अर्थी तीव्र स्नेह-राग को बुरी तरह झकझोर देती है। ऐसी विषम परिस्थिति में भी राग के बंधनों से ऊपर उठकर समता भाव रखना ही कर्म-योग की असली परीक्षा है।

4. सार एवं संदेश : राग चाहे सर्वज्ञ प्रभु के प्रति अगाध निष्ठा का हो या शिष्य-पुत्र के प्रति वात्सल्य का— कोई भी मोह, कितना भी पवित्र क्यों न हो, सर्वोच्च आध्यात्मिक अवस्था (केवल ज्ञान और वीतरागता) की प्राप्ति में बाधक है। जब तक राग का यह सूक्ष्म बंधन पूरी तरह विच्छेदित नहीं होता, तब तक पूर्ण मुक्ति संभव नहीं है।

ध्यान साधना से आत्मसाक्षात्कार की ओर बढ़ते कदम

चिक्कमगलूर।

साध्वी पुण्ययशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार तेरापंथ सभा द्वारा प्रेक्षा वाहिनी गांधीनगर बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक आयोजन किया गया।

कार्यशाला में मंडल की बहनों एवं भाइयों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ 'आत्मसाक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा' की सुमधुर संगीतिका के माध्यम से हुआ, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक एवं सकारात्मक ऊर्जा से भर दिया। कार्यशाला में वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक डालमचंद सेठिया एवं इंटरनेशनल प्रेक्षा ट्रेनर रेणु कोठारी ने अपने प्रभावशाली एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन से सभी को प्रेक्षाध्यान के विभिन्न आयामों से परिचित कराया।

साथ ही प्रेक्षा प्रशिक्षक धनराज डूंगरवाला एवं विमल कटारिया का भी कार्यशाला में महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इंटरनेशनल प्रेक्षा ट्रेनर रेणु कोठारी ने अत्यंत सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली शैली में प्रेक्षाध्यान के विभिन्न आयामों को विस्तारपूर्वक समझाया। उन्होंने

एक दिवसीय अभ्यास सत्र में अनुभूत हुई आंतरिक शांति

सर्वप्रथम प्रेक्षाध्यान क्या है, इसका उद्देश्य क्या है तथा हमारे जीवन में इसका क्या महत्व है, इस विषय पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात प्रेक्षाध्यान की कार्यपद्धति एवं उसके व्यावहारिक उपयोग को समझाते हुए विभिन्न ध्यान-पद्धतियों का प्रयोगात्मक अभ्यास करवाया। उन्होंने श्वास-प्रेक्षा, कॉन्शियस माइंड, सबकॉन्शियस माइंड आदि विषयों को सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाया। वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक डालमचंद सेठिया ने प्रेक्षाध्यान के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि 'ढाई मिनट का प्रेक्षाध्यान बेला की तपस्या के बराबर है।' उनका यह कथन सभी के लिए अत्यंत प्रेरणादायी रहा। उन्होंने ध्यान को केवल कार्यशाला तक सीमित न रखते हुए इसे अपने दैनिक जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

साध्वी पुण्ययशा जी ने भी ध्यान एवं प्रेक्षाध्यान के महत्व पर अपना मंगल मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने ध्यान को आत्मनिरीक्षण, मानसिक संतुलन एवं आत्म-विकास का प्रभावी माध्यम बताते हुए इसे नियमित रूप से जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। सम्पूर्ण कार्यशाला ज्ञान, अनुभव एवं आत्मचिंतन का सुंदर संगम रही। प्रत्येक प्रतिभागी को ध्यान की विभिन्न विधियों को समझने के साथ-साथ उनका प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर मिला। कार्यशाला ने यह संदेश दिया कि प्रेक्षाध्यान केवल एक अभ्यास नहीं, बल्कि स्वयं से जुड़ने, अपने भीतर झांकने एवं सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने की प्रभावी प्रक्रिया है। कार्यक्रम के अंत में सुरेंद्र गोखरू ने आभार व्यक्त करते हुए साध्वी जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तथा सभी प्रशिक्षकों, सहभागियों एवं सहयोगियों का धन्यवाद किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

समाज निर्माण और संस्कार संवर्धन का मजबूत माध्यम

युवा ऊर्जा को नई दिशा देने के लिए नए केंद्र का लोकार्पण

कांकरिया-मणिनगर, अहमदाबाद।





अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद पूर्व द्वारा निर्मित 'युवालोक' का लोकार्पण तेरापंथ भवन, कांकरिया-मणिनगर में गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी की सहवर्ती साध्वी आत्मप्रभा जी के मंगलपाठ से हुआ। तत्पश्चात उपासक प्राध्यापक एवं जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नवलखा ने जैन संस्कार विधि से लोकार्पण सम्पन्न करवाया।

इस अवसर पर उपासक संस्कारक बाबूलाल चोपड़ा एवं संस्कारक पंकज डांगी भी उपस्थित रहे। इस शुभ अवसर पर मंगल भावना यंत्र की स्थापना अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत एवं तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद पूर्व के अध्यक्ष नलिनकुमार दूगड़ एवं उपाध्यक्ष प्रथम दीपक बोथरा द्वारा की गई। युवालोक के निर्माण में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, कांकरिया-मणिनगर का विशेष एवं महत्वपूर्ण सहयोग रहा। सभा के सहयोग, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से युवालोक की परिकल्पना साकार हो सकी। इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए परिषद् ने सभा के अध्यक्ष चम्पालाल गांधी, मंत्री चैनरूप डोसी के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त की।

युवालोक कार्यालय में आयोजित राउंड टेबल बैठक में कांकरिया सभा के अध्यक्ष चम्पालाल गांधी, मंत्री चैनरूप डोसी, अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तृतीय संदीप हिंगड़, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चतुर्थ कमलेश भंसाली, राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री प्रथम विनय लिंगा, राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री द्वितीय महेश परमार, शाखा प्रभारी अर्पित नाहर, प्रबुद्ध विचारक अशोक लुनिया, मुकेश गूगलिया, तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद पूर्व के उपाध्यक्ष प्रथम दीपक बोथरा एवं सभी संस्कारकों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने परिषद् के कार्यों की सराहना करते हुए संस्कार क्षेत्र में प्राप्त प्रथम पुरस्कार एवं त्यागी थर्सडे अभियान में सर्वाधिक सहभागिता के लिए मिले सम्मान की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि नवगठित परिषद् होने के बावजूद अहमदाबाद पूर्व ने संगठन को मजबूती प्रदान करते हुए उल्लेखनीय कार्य किए हैं। उन्होंने परिषद् के युवाओं का उत्साहवर्धन करते हुए आह्वान किया कि वे इसी समर्पण एवं सक्रियता के साथ कार्य करते हुए परिषद् को श्रेष्ठ परिषदों की श्रेणी में स्थापित करें। बैठक में उपस्थित सभी गणमान्यजनों ने युवालोक के शुभारंभ पर परिषद् को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं तथा सेवा, संस्कार एवं संगठन के क्षेत्र में नए-नए आयाम स्थापित करते हुए निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर तेयुप अहमदाबाद पूर्व द्वारा टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) में आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर के बैनर का अनावरण भी अभातेयुप के राष्ट्रीय प्रबंध मंडल द्वारा किया गया। इस अवसर पर अभातेयुप के युवालोक के राष्ट्रीय सह-प्रभारी दिलीप भंसाली, व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के सह-प्रभारी निकुंज पारीख, नेत्रदान के सह-प्रभारी कुलदीप नवलखा, जैन तेरापंथ न्यूज़ के प्रतिनिधि वीरेन्द्र मणोत, अहमदाबाद के अभातेयुप सदस्य, कांकरिया सभा के मंत्री चैनरूप डोसी एवं अन्य पदाधिकारीगण, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी तथा समाज के अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

TPF: प्रशासनिक सेवाओं में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का समावेश

लाडनूं।

जैन विश्व भारती, लाडनूं में 7वें प्रशासनिक अधिकारी अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस वर्ष कॉन्फ्रेंस की थीम 'Excel with AI (Adhyatmik Intelligence)' रखी गई। देशभर से प्रशासनिक सेवाओं से जुड़े 23 अधिकारियों ने इसमें सहभागिता की। कार्यक्रम के शुभारंभ परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी एवं युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी का प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ।

उद्घाटन अवसर पर टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन पातावरी, कुलदीप रांका (IAS) एवं एकता जैन (IRS) ने अपने विचार व्यक्त किए। कॉन्फ्रेंस के दौरान अनेकांतवाद, प्रेक्षाध्यान एवं आध्यात्मिक इंटेलिजेंस जैसे विषयों पर विशेष सत्र आयोजित किए गए। साध्वी वीर प्रभा जी, साध्वी चारितार्थ प्रभा जी ने अनेकांतवाद विषय पर वक्तव्य दिया, जबकि साध्वी समता प्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। दोपहर के सत्र में साध्वी ऋद्धि प्रभा जी ने 'Adhyatmik Intelligence' विषय पर मार्गदर्शन प्रदान किया। इसके पश्चात प्रशासनिक अधिकारियों ने आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य प्रवर की सेवा के अंतर्गत महाश्रमण विहार में सहभागिता की। रात्रिकालीन सत्र में राजेंद्र भूतोरिया कोलकाता की टीम ने नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से परिवार

राष्ट्रीय सम्मेलन में अनेक विषयों पर गहन मंथन

में व्याप्त वहम पर रोचक जानकारी प्रदान की की। टीपीएफ कार्यालय स्थित बोधिगृहम में परिचय सत्र आयोजित किया गया, जिसमें मुनि राजनिश कुमार जी ने सभी अधिकारी को धर्मसंघ से जुड़ने का आह्वान किया साथ ही राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन पटावरी, राष्ट्रीय महामंत्री नवीन चोरड़िया ने टीपीएफ के बारे में जानकारी दी। अधिवेशन को सफल बनाने में मुकेश गादिया एवं नवीन सुराणा का विशेष श्रम रहा उसके लिए आभार.

तेयुप सूरत को मिले गौरवपूर्ण सम्मानों का प्रदर्शन

सूरत।

तेरापंथ भवन, सूरत में मुनि डॉ.मदनकुमारजी स्वामी आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्रावक समाज के सम्मुख तेरापंथ युवक परिषद, सूरत को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 60वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्राप्त गौरवपूर्ण सम्मानों (संस्कार में श्रेष्ठ सहित अन्य 7 + 2 सम्मान) का प्रदर्शित किये गये।

विशेष उल्लेखनीय हैं कि इस

सेवा, संस्कार और संगठन की कार्यशैली को मिली नई पहचान सूरत

अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत सहित राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार सम्मान से सम्मानित संजय सुराणा की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सूरत की केंद्रीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण, तेयुप निवर्तमान पदाधिकारीगण, वर्तमान पदाधिकारीगण एवं परिषद के समर्पित कार्यकर्ता तथा बड़ी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। यह अवसर परिषद के लिए गौरव, कृतज्ञता एवं प्रेरणा का रहा। इन सम्मानों के माध्यम से परिषद की सेवा, संस्कार, संगठन एवं समर्पित कार्यशैली को नई पहचान मिली।

गृहस्थ जीवन की अहिंसा पर आधारित क्विज प्रतियोगिता

उत्तर दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल उत्तर दिल्ली द्वारा तेरापंथ भवन, रोहिणी में चातुर्मास विवेगे धम्म माहिये (गृहस्थ जीवन की अहिंसा में मार्गदर्शिका) क्विज प्रतियोगिता का ज्ञानवर्धक एवं रोचक आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के पावन सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात मंडल की बहनों ने प्रेरणागीत प्रस्तुत कर वातावरण को ऊर्जामय बना दिया।

अध्यक्ष इंद्रा सुराणा ने सभी बहनों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए प्रतियोगिता में सहभागिता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

साध्वी के मंगल उद्बोधन के पश्चात प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता में 3-3 बहनों के 5 ग्रुप बनाए गए और 5 रोचक राउंड रखे गए। कार्यक्रम संयोजन उपाध्यक्ष सरिता चोपड़ा ने कुशलतापूर्वक किया। सहमंत्री विनीता डागा ने स्कोरबोर्ड तथा रेखा जैन ने टाइमर की जिम्मेदारी संभाली। आभार ज्ञापन सहमंत्री मोनिका पटावरी ने किया।

युवा एवं किशोर शक्ति का अद्भुत तप-साधना अभियान

गाँधीनगर दिल्ली।

निरंतर उपवास और साधना से स्थापित किए गए नए कीर्तिमान

तेयुप व TKM गाँधीनगर दिल्ली के इस कार्यकाल में युवाओं एवं किशोरों द्वारा धर्म, तप और त्याग के क्षेत्र में जो प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं वे निश्चित रूप से गौरव एवं अनुमोदना के पात्र हैं। तप की ऐसी बहार, जिसने रचा नया इतिहास!

1. TKM दिल्ली के इतिहास में प्रथम गौरवपूर्ण उपलब्धि TKM गाँधीनगर–दिल्ली के सक्रिय सदस्य मास्टर अमन बुच्चा ने मासखमण (31 उपवास) की महान तप आराधना कर किशोर शक्ति के आत्मबल एवं धर्मनिष्ठा का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया।

2. तेयुप दिल्ली के इतिहास में प्रथम स्वर्णिम उपलब्धि- तेयुप गाँधीनगर–दिल्ली के सक्रिय सदस्य नितीश डागा ने मासखमण (30 उपवास) की तपस्या पूर्ण कर युवा शक्ति के तप, त्याग एवं आत्मबल का अद्भुत परिचय दिया। (इस मासखमण के उपलक्ष पर तेयुप व TKM के युवा व किशोरों ने 25 उपवास व 9 एकासन कर मासखमण की अनुमोदना की)

3. 1 दिन 1 युवक 1 उपवास - इस अभियान के अंतर्गत हमारे युवाओं ने मिलकर 60 दिनों में 60 उपवास की अनुपम तप आराधना की।

TKM द्वारा संचालित यह प्रेरणादायी अभियान आज निरंतर 91वें दिन भी गतिमान है।

31 दिवसीय मासखमण तप का भव्य अभिनंदन

केसिंगा।

तपस्या आत्मशुद्धि, संयम और आंतरिक जागरण की साधना है

स्थानीय तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमारजी एवं मुनि हेमंत कुमारजी का चातुर्मास गतिमान है। चातुर्मास के पावन अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की तपस्या एवं साधना की जा रही है।

इसी तप आराधना की श्रृंखला में संजय जैन, सुपुत्र महेंद्र जैन एवं उर्मिला देवी जैन ने 31 दिवसीय उपवास की दीर्घ तपस्या, जिसे मासखमण तप कहा जाता है, पूर्ण कर आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि हेमंत कुमारजी ने किया। समारोह में तपस्वी संजय जैन के परिवारजनों ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए उनकी तपस्या की हृदय से अनुमोदना की। उनके पिताजी, माताजी, पुत्री एवं भाई ने अपने विचार साझा करते हुए तपस्या के प्रति गौरव एवं प्रसन्नता व्यक्त की तथा संजय जैन के आध्यात्मिक पुरुषार्थ की सराहना की।

इस अवसर पर समाज की ओर से भी तपस्वी के प्रति अनुमोदना व्यक्त की गई। स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रामकुमार जैन, उड़ीसा प्रांतीय जैन श्वेतांबर सभा के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण जैन, स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अभिषेक जैन, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री नीलम जैन तथा TPF ईस्ट जोन के प्रेसिडेंट कमल कुमार जैन ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

मुनि हिमांशु कुमारजीने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में तपस्या के महत्व को समझाते हुए कहा कि तप केवल शरीर को कष्ट देने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम और आंतरिक जागरण की साधना है। तप के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की शक्तियों को जागृत करता है और आत्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ता है। उन्होंने तपस्वी संजय जैन के 31 दिवसीय मासखमण तप की अनुमोदना करते हुए उनके आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना की।

तपस्या से आत्म-शुद्धि और कर्म निर्जरा

कटिहार।

दृढ़ संकल्प और साधना का भव्य अभिनंदन

मुनि प्रशांत कुमारजी और मुनि कुमुद कुमारजी के सानिध्य में विवेक पटावरी के मासमखुण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। मुनि प्रशांत कुमार ने कहा कि तपस्या महान कार्य है। भगवान महावीर स्वामी ने इसे मोक्ष का मार्ग बताया है।

ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप के विकास से मुक्ति का रास्ता प्रशस्त होता है। तपस्या का लक्ष्य आत्मशुद्धि होना चाहिए। भक्ति, श्रद्धा और समर्पण के भाव से किया गया तप कर्मों की निर्जरा में सहायक होता है। वहीं, अभिमान और भौतिक कामनाओं के साथ तप करने से कर्मबंधन होता है। मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा कि तप धार्मिक जीवन की पहचान है। आसक्ति, नकारात्मक भावों और कषायों का त्याग करना भी कठिन तप है। आत्मबल और गुरु की प्रेरणा से विवेक पटावरी ने यह तप पूरा किया है। महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम शुरू हुआ। सभा और विभिन्न संगठनों ने प्रशस्ति पत्र व साहित्य देकर तपस्वी का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार ने किया।

पर्यावरण शुद्धि दिवस पर गोरेगांव में सफल वृक्षारोपण

गोरेगांव, मुंबई।

पगरव सोसायटी के प्रांगण में हुआ पर्यावरण संरक्षण का आयोजन

पर्यावरण दिवस के अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में, अणुव्रत समिति मुंबई के निर्देशन में, क्षेत्रिय अणुव्रत समिति गोरेगांव के संयोजक शांतिलाल बाफना के संयोंजकीय में, पगरव सोसायटी के प्रांगण में वृक्षारोपण का सुंदर आयोजन किया। इस कार्य की स्थानीय सोसायटी के रहवासियो ने बहुत ही प्रशंसा की एवं कहा कि पेड़ पर्यावरण का एक अनिवार्य हिस्सा है।

धरती पर पेड़ों और पौधों के अस्तित्व के बिना मनुष्य और जानवरों की अन्य प्रजातियों का अस्तित्व संभव नहीं है। वृक्षारोपण के बुनियादी लाभों में से एक यह है कि यह हमें ऑक्सीजन देती हैं। ये कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण को शुद्ध और स्वच्छ बनाने का कार्य करती हैं। रबर के अलावा फल, लकड़ी, आदि और भी बहुत कुछ प्रदान करते हैं। लोगों को अपने लाभों को बल देते हुए अधिक पेड़ों के रोपण के महत्व के बारे में संवेदनशील होना चाहिए।

इसका प्रसार रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, सोशल मीडिया, होर्डिंग और पत्रक के माध्यम से किया जा सकता है। वृक्षारोपण पहाड़ी इलाकों में वे मिट्टी को पकड़ उसे खिसकने से भी रोकते हैं। पेड़ों को उनके चिकित्सा गुणों के लिए भी जाना जाता है। पेड़ फाइबर, रेसिन, रबड़, टैनीन, शहद और बहुत सी चीजें प्रदान करते हैं। क्षेत्रीय संयोजक शांतिलाल बाफना नें सभी का स्वागत किया एवं अणुव्रत गीत का संगान किया, उपासक रमेश सिंघवी नें कहाँ की पर्यावरण हमारे चारों ओर का वह प्राकृतिक और कृत्रिम आवरण है जो हमें हवा, पानी, मिट्टी और सभी जीव-जंतुओं से जोड़ता है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है:परि'(चारों-तरफ) और 'आवरण' (घेरा) यह हमें जीने के लिए शुद्ध हवा, साफ पानी और भोजन प्रदान करता है। पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए पर्यावरण का संतुलन आवश्यक है, पर्यावरण संरक्षण के उपाय- अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। इसको सफल बनाने में अणुव्रत परिवार मुंबई सें राकेश बोहरा सभा सें कमलेश चंडालिया, दिलीप बाफना, शांतिलाल कोठारी, तेयुप सें अध्यक्ष मनीष सिंघवी, मंत्री नीलेश सांखला, भरत बोहरा एवं कन्या मंडल सें रैनी सिसोदिया आदि की सहभागिता रही। कार्यक्रम का सुंदर संयोजन एवं आभार ज्ञापन ABTYP JTN सें विकास धाकड़ नें किया।

उन्नयन कार्यशाला में स्टार्टअप और शेयर बाजार से जुड़े महत्वपूर्ण टिप्स

श्रीडूंगरगढ़।

व्यापार, उद्यमशीलता और व्यावहारिक सोच के महत्व पर दिया गया जोर

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी लक्ष्यप्रभाजी के सानिध्य में 'उन्नयन' कार्यशाला की तृतीय कड़ी का आयोजन किया गया। 'Inspiring श्रावक' विषय पर आयोजित इस कार्यशाला में मुंबई से पधारे संदीप जैन ने अपने प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक वक्तव्य से उपस्थित जनसमूह को लाभान्वित किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने व्यापार, शेयर बाजार, बिजनेस आइडिया एवं स्टार्टअप इंडिया जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर रोचक और उपयोगी जानकारियाँ साझा कीं। कार्यशाला को सफल बनाने में मुदित पुगलिया, विशाल बोथरा, यश चोपड़ा, मयंक पुगलिया एवं गौतम झाबक का विशेष योगदान रहा। मंच संचालन विशाल बोथरा ने किया।

नशामुक्त परिवार मैराथन 2026 का आयोजन

रायपुर।

नशामुक्त परिवार, स्वस्थ परिवार और नशामुक्त भारत के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से देश के विभिन्न शहरों में 'नशामुक्त परिवार मैराथन 2026' का आयोजन किया गया।

इस अभियान के माध्यम से देश के प्रत्येक नागरिक को नशे के विरुद्ध जागरूक करने का प्रयास करते हुए जनआंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया गया। रायपुर में महावीर स्तूप, कोतवाली चौक से नशामुक्त मैराथन का शुभारंभ करते हुए विभिन्न मार्गों पर जागरूकता संदेश/संकल्प के साथ भ्रमण करते हुए तेरापंथ अमोलक भवन, सदर बाजार में मैराथन का समापन किया गया।

आयोजक अणुव्रत समिति, रायपुर ने शहर के सभी नागरिकों के साथ सहभागी सभी को नशे के दुष्परिणाम से अवगत कराते नशामुक्त रहते हुए स्वस्थ्य व्यक्ति स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज स्वस्थ राष्ट्र के निमार्ण में सहभागी बनने हेतु जागरूक करने का प्रयास किया। अपील की गई कि सभी नशामुक्त भारत के निर्माण का संकल्प लें, यह केवल एक दौड़ नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवनशैली, युवा शक्ति और नशामुक्त परिवार के निमार्ण का सामूहिक प्रयास है।

आयोजन का संकल्प नशामुक्त परिवार – स्वस्थ परिवार – नशामुक्त भारत। एक कदम स्वास्थ्य की ओर, एक कदम नशामुक्ति की ओर। मैराथन में विशेष रूप से सतपाल जैन, गौतम गोलछा, मनोज बोथरा, मनीष सिंघी, वीरेंद्र डागा, बसंत जैन, कनक छाजेड़ सहभागी रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

संक्षिप्त खबर

विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष में स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, डेंटल केयर एवं डे केयर श्रीरामपुरम के अंतर्गत विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष में रियायती दर पर हृदय संबंधित जांच शिविर का समायोजन किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। शिविर में कार्डियक प्रोफाइल के अंतर्गत ग्यारह विभिन्न प्रकार की जांच समावेश की गई। कुल 26 सदस्यों ने लाभ लिया। तेयुप द्वारा उपस्थित सदस्यों को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाएं, डॉक्टर की उपलब्धता एवं अन्य जानकारी से अवगत करवाया। स्थानीय लोगों ने एटीडीसी के प्रति आभार व्यक्त किया। एटीडीसी स्टाफ स्मिता, विजयलक्ष्मी, दीपाश्री, श्यामला एवं धनुश्री एवं डॉ.सुनयना का विशेष श्रम नियोजित हुवा।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

बालोतरा। तेरापंथ सभा के तत्वावधान में प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य एवं निर्देशन में, बालोतरा, तेरापंथ भवन में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित हुआ। आज उसका समापन समारोह के अवसर पर साध्वी मंगल प्रज्ञा ने कहा- प्रेक्षाध्यान दृष्टि परिवर्तन की प्रक्रिया है। आचार्य तुलसी के सुचिन्तन एवं प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रायोगिक साधना से युग को प्रेक्षाध्यान पद्धति प्राप्त हुई। आज तनाव और विषम परिस्थितियों से ग्रसित मानवजाति के लिए प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति-कारगर उपाय है। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक अनेक समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

आज आपाधापी जिन्दगी से उबरने के लिए व्यक्ति बाहर की यात्रा करता है, पर वह शान्ति नहीं मिलती जो भीतर की यात्रा से प्राप्त होती है। ध्यान साधना मार्ग भीतर प्रवेश और खुद की पहचान का मार्ग है। जब खुद को पहचान ने की गहरी तड़फ होती है, व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। दृढ़ संकल्प, आस्था, और पुरुषार्थ के द्वारा ही मंजिल मिलती है। साध्वी प्रो. मंगल प्रज्ञाजी ने कहा देश विदेशों में प्रेक्षाध्यान के शिविरों से-लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों द्वारा जीवन शैली-में बदलाव संभव है। बालोतरा में त्रिदिवसीय शिविर का सफल आयोजन हुआ। मुंबई से समागत उपासक प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक शांतिलाल कोठारी एवं मीना साबद्रा, साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, डा.साध्वी राजुलप्रभाजी, डा.साध्वी चैतन्यप्रभाजी, डा.साध्वी शौर्यप्रभाजी ने - आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, ध्यान, अनुप्रेक्षा, मंत्रप्रेक्षा आदि प्रयोग करवाए एवं सैद्धान्तिक, प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षक शांतिलाल एवं शिविरार्थी सदस्यों ने प्रेक्षा संगान की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा के मंत्री मोहनलाल बाफना सहमंत्री राजेश बाफना एवं सभा team ने जागरुकता से दायित्व का निर्वहण-किया। तेरापंथ सभा के मंत्री मोहन लाल बाफना ने मंच संचालन किया।

पर्यावरण शुद्धि दिवस पर वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम

गुवाहाटी। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चतुर्थ दिवस पर्यावरण शुद्धि दिवस पर अणुव्रत समिति गुवाहाटी द्वारा चांगसारी स्थिति सुमन बुधिया के फार्म हाउस में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुवात अणुव्रत गीत से हुई। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा के असम त्रिपुरा प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय चौरड़िया ने स्वागत वक्तव्य में विश्व में बढ़ रहे प्रदूषण की बात कही एवं सभी से अधिक से अधिक पेड़ लगाने, पानी, बिजली आदि का अपव्यय न करने का निवेदन किया। इस अवसर पर उपस्थित अणुविभा के असम त्रिपुरा प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया, अणुव्रत कार्यकारिणी सदस्य एवं समिति के निवर्तमान अध्यक्ष बजरंग बैद ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन कार्यकारिणी सदस्य निर्मल बैद ने किया।

आध्यात्मिक चेतना और ज्ञान संवर्धन

गांधीनगर, बैंगलोर।

प्रतिक्रमण के गूढ़ अर्थों को जानने की अनूठी स्पर्धा

साध्वी पावन प्रभाजी ठाणा ४ की मंगल प्रेरणा एवं सान्निध्य में तेरापंथ भवन गांधीनगर में प्रतिक्रमणः द इंटरनल डीटॉक्स प्रश्न मंच प्रतियोगिता का भव्य आयोजन हुआ।

मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी पावन प्रभाजी ने अपने मंगल उद्बोदन में कहा प्रतिक्रमण हमारी आत्मा को निर्मल एवं हल्का बनाते हुए मोक्ष मार्ग का एक सरल उपाय है। नित प्रतिदिन प्रतिक्रमण करने से प्राणिमात्र के प्रति दया के भाव उभरते है तथा भावों को साथ जोड़ने से सेल्फ हीलिंग स्वतः ही हो जाती है। अध्यक्ष लक्ष्मी बोहरा ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी रम्यप्रभाजी के अथक श्रम से श्रावक श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण भी कंठस्थ किया तथा प्रथम चरण में प्रतिक्रमण पर आधारित 500प्रश्न पुस्तिका का वितरण हुआ जिसे भरते हुए ज्ञान की उपासना हुई । किताब के उत्तर लिख कर वापिस देने वाले भाई बहनों को पुरस्कृत किया गया। प्रश्न मंच प्रतियोगिता में 10 टीम में 50 प्रतिभागी रहे जिनको सांत्वना पुरस्कार दिया गया। प्रश्न मंच के द्वितीय चरण में Top 10 का चयन हुआ। फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट राउंड के द्वारा Top5 का सिलेक्शन हुआ ।प्रथम रुचिका मेहता, द्वितीय ममता शाह, तृतीय रीना धारीवाल , चतुर्थ मीना बांटिया तथा पंचम विजेता समता मरोठी रहे । सभी का सम्मान चाँदी के सिक्को द्वारा किया गया। क्विज मास्टर आदित्य मांडोत रहे जिन्होंने बड़े ही रोचक ढंग से ppt द्वारा प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया।

संयोजिका रेखा भंसाली ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया तथा संयोजिका मीना छाजेड़ ने आभार जताया।

विघ्न निवारण और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार

कटक।

सामूहिक संगान और मंत्रोच्चार से भक्तिमय हुआ वातावरण

ओडिशा के इतिहास में प्रथम बार एवं मुनिश्री मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में 6वीं बार विघ्नहर ह्रीं कार अनुष्ठान का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कटक के तत्वावधान में शहीद भवन के प्रांगण में हुआ। इस अनुष्ठान में 108 जोडों सह सैंकड़ो अनुष्ठानकर्ताओं ने आचार्य सिद्धसेन द्वारा रचित कल्याण मन्दिर स्तोत्र का मुनि जयेश कुमार के भावपूर्ण संगान के साथ उच्चारण एवं श्रवण किया। इस अवसर पर अनुष्ठान स्वर प्रस्तोता मुनि जयेश कुमारजी ने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना से जुड़ी विशिष्ट चमत्कारी घटना का उल्लेख करते हुए कहा प्रभु पार्श्वनाथ का माहात्म्य और प्रभाव तीर्थंकर परंपरा में अपना अलग विशिष्ट स्थान रखता है।उनपर रचित अनेक स्तोत्र भक्तों की आस्था के अनन्य केंद्र है। इन्हीं स्तोत्रों की कड़ी में एक महत्वपूर्ण नाम है कल्याण मंदिर स्तोत्र। इस स्तोत्र के रचयिता आचार्य सिद्धसेन एक क्रांतिकारी पुरुष थे। वे कहते थे मेरा जन्म सिर्फ अतीत के गीत गाने नही हुआ है।अगर मैं कुछ नया नही कर सकूं तो मेरा जीवन व्यर्थ है। ऐसी सोच वाले रखने व्यक्ति द्वारा महान भक्ति काव्य की रचना कुछ विचित्र लग सकती है। पर सिद्धसेन भक्ति विरोधी नही थे। उन्हें वह स्तुति पसंद थी जो अपने आराध्य के गुणों को आत्मसात करने का भाव जागृत करें ना कि जो सिर्फ अपनी स्वार्थ सिद्धि का प्रयत्न हो।

यह अनुष्ठान भी सभी के लिए विघ्न निवारक ,सिद्धि दायक होने के साथ ही प्रभु पार्श्वनाथ के गुणों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान करने वाला बने यह काम्य है। उपस्थित सभी अनुष्ठान कर्ताओं ने मुनि जयेश कुमारजी द्वारा प्रस्तुत कल्याण मंदिर स्तोत्र के संगान की प्रशंसा करते हुए कहा कि मुनिश्री के स्वरों के वाइब्रेशन ने उन्हें अंतर तक प्रकम्पित कर दिया। विघ्नहर ह्रीं कार अनुष्ठान का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। मुनि भव्य कुमारजी ने पार्श्व स्तुति में प्रभु पार्श्व देव चरणों में गीत का संगान कर अनुष्ठान के क्रम को आगे बढाया। सभाध्यक्ष मुकेश सेठिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। ॐ श्री पार्श्वनाथाय के सह मंत्रोच्चार से वातावरण में अपूर्वता प्रदान की गई। अनुष्ठान के दौरान ह्रीं का पिरामिड प्रत्येक सदस्य के सिर पर शक्ति का केन्द्रीकरण कर रहा था।ह्रीं आकृति में रोशनी का नवीनीकरण स्पॉट रोशनी के माध्यम से किया गया। ह्रीं कार अनुष्ठान में 108 जोड़ों की सहभागिता उनकी साधना के उत्साह को मुखर कर रही थी। कटक, ओडिशा के इतिहास में ऐसा उपक्रम सम्पूर्ण नवीनता एवं आध्यात्मिकता लिए हुए प्रथम बार हुआ। कार्यक्रम संयोजक विकास नौलखा ने भावाभिव्यक्ति दी। सभा मंत्री रंजीत दुग्गड ने आभार प्रकट किया।

सद्व्यवहार और साधना से टलते हैं ग्रह-दोष

कटिहार।

ज्योतिष विज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत संगम

तेरापंथ सभा कटिहार की ओर से मुनि प्रशांत कुमारजी एवं मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में हस्तरेखा एवं ग्रहविज्ञान कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में हस्तरेखा और ग्रहों के प्रभाव से जुड़ी विभिन्न जानकारियां दी गयीं। मुनि प्रशांत कुमार ने कहा कि जैन धर्म वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। ज्योतिष भी एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने अष्टांग निमित्त पर विस्तार से ग्रंथ लिखा है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के कर्म और आचरण अच्छे हों तो कोई भी ग्रह उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्म और आचरण को बेहतर बनाने पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पिता के साथ नम्र व्यवहार करने से जीवन तेजस्वी बनता है। णमोकार महामंत्र, तीर्थंकरों का जप और धार्मिक साधना से मन पवित्र होता है और ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में सहायता मिलती है। एस्ट्रो प्रवीणा बंसल ने प्रोजेक्टर के माध्यम से हस्तरेखा एवं ग्रहविज्ञान की विस्तृत जानकारी दी। मंत्र जप, भक्तामर स्तोत्र, लोगस्स पाठ और णमोकार महामंत्र के माध्यम से ग्रह संबंधी दोषों के निवारण के उपाय बताए। सभा मंत्री राजकुमार पुगलिया, रतनलाल भंसाली एवं हनुमान नाहटा ने विचार रखे।

संक्षिप्त खबर

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की लिखित परीक्षा का सफल आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, गांधीनगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में, आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में विज्ञ, विशारद एवं स्नातक की ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की लिखित परीक्षा का सफल आयोजन किया गया। परीक्षा का शुभारंभ साध्वी पावनप्रभा के मंगल पाठ से हुआ। इस अवसर पर साध्वी उन्नतयशाजी, साध्वी आत्मयशाजी एवं साध्वी रम्यप्रभाजी का भी पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा का सफल आयोजन

चेन्नई। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ–महासभा के निर्देशन में पूरे देशभर में निर्धारित समय आयोजित ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा का आयोजन तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ विद्यालय, साहूकारपेट में सआनंद एवं सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हुआ। चेन्नई सभा के अध्यक्ष महेंद्र मांडोत, मंत्री चंद्रेश चिप्पड़, ज्ञानशाला व्यवस्थापक राजेश सांड, आंचलिक संयोजिका कविता रायसोनी, सह-संयोजिका चेतना वोहरा, कमलेश बाफना, विभिन्न विभागों के पदाधिकारी उपस्थित रहे इस परीक्षा में कुल 20 परीक्षार्थी प्रशिक्षिकाओं ने पूर्ण प्रमाणिकता, जागरूकता एवं उत्साह के साथ परीक्षा में भाग लिया। परीक्षा के सफल आयोजन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्यकर्ताओं एवं परीक्षार्थियों के साथ-साथ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं दीपाली सेठिया एवं सुनीता रायसोनी के महत्वपूर्ण सहयोग रहा। जानकारी प्रचार प्रसार प्रभारी संतोष सेठिया ने दी।

नशा मुक्ति मैराथन का आयोजन

शिरपुर। अणुव्रत समिती शिरपूर के द्वारा नशा मुक्ति मॅरेथॉन का आयोजन किया गया। लगभग 20 सदस्य को कल्पेश गेलडा ने अणुव्रत के मुख्य 11 नियम की जानकारी दी। मॅरेथॉन के पश्चात सभी को नशा मुक्ति का संकल्प कर अणुव्रत गीत का संगान हुआ। मंगलपाठ से कार्यक्रम की सम्पन्नता हुई। वाघाडी आश्रम स्कूल मे जाकर रंगोली स्पर्धा आयोजित की गयी। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के अध्यक्ष हेमंत गेलडा ने किया।

'बनों प्रज्ञावान' प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा

विजयनगर। तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री विनीत कुमारजी की पावन प्रेरणा एवं मुनि पुनीत कुमारजी के निर्देशन में आयोजित 'बनों प्रज्ञावान' प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता के चौथे एवं अंतिम चरण के परिणाम मुनि के सान्निध्य में घोषित किए गए। इसके साथ ही मुनिश्री ने सभी चारों चरणों में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले तथा सभी चारों चरणों में सहभागी बनने वाले प्रतियोगियों के नाम भी घोषित किए गए। प्रतियोगिता के चौथे चरण में प्रथम स्थान प्राप्त किया प्रिया पारख एवं राकेश दूधेडिया ने, द्वितीय स्थान पर रहे अमिता सामसुखा व हंसा दुगड़ तथा तृतीय स्थान पर प्राप्त किया चंदा दुधेडिया एवं अंशु छाजेड़ ने। सभी चारों चरणों में (बम्पर)श्रेष्ठ प्रतियोगी के रूप में प्रथम स्थान प्राप्त किया राकेश दूधेडिया ने द्वितीय स्थान पर सरोज छाजेड़ एवं तृतीय स्थान पर रहे अमिता साम सुखा। सभी प्रतियोगियों को महिला मंडल द्वारा परितोषित प्रदान किया।

- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
- आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** भूतपूर्व अध्यक्ष व वर्तमान मे कार्यसमिति सदस्य पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी राजीव खटेड़ के नूतन गृह के प्रवेश का मंगल कार्यक्रम उपासक व जैन संस्कारक पुष्पराज सुराना व अनूप गंग ने NK Appartment, लेकटाउन कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान सम्पन्न कराया।

निःस्वार्थ समर्पण और सकारात्मक चिंतन से ही मिलता है सच्चा आनंद

बोरावड़।

(प्रदीप छाजेड़ द्वारा विचार)

भारतीय दर्शनशास्त्र का यह तथ्य है जो सत्य है कि अगर कुछ पाने की लालसा रखेंगे तो दुःख व निराशा का स्वाद चखेंगे। वह इसके विपरीत यदि देने का भाव रखेंगे तो सदा सुख व आनन्द से सरोबार रहेंगे। यह जीवन का एक अजब दर्शन ही है। इसे बहुत कम लोग समझते हैं। इसीलिए उनके लिए यह एक प्रश्न ही है लेकिन जो समझ लेते हैं वे तो मालामाल हो जाते हैं। आदमी सुनकर कल्याण को जानता हैं। वह सुनकर पाप को भी जान लेता हैं। विशेष बात यह हैं कि दोनों को जानकर जो श्रेय हों, हितकर हों, उसका समाचरण करने का प्रयास हमारे द्वारा होना चाहिए। मनुष्य के पास पाँच इन्द्रियाँ होती हैं। ये पाँच इन्द्रियाँ ही सही से माध्यम बनकर आदमी को ज्ञान भी कराती हैं और भोग भी कराती हैं। श्रोतेन्द्रिय और चक्षुरीन्द्रिय बाहर से ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम माध्यम बनती हैं। प्रवचन के श्रवण करने से भी ज्ञान की वृद्धि हो सकती हैं। वह किसी के बोलने से भी ज्ञान प्राप्त हो सकता हैं। शिक्षक बोलकर विधार्थियों को ज्ञान प्रदान करते हैं। अच्छी बातों के श्रवण से मानों कान

नैतिक और आध्यात्मिक ग्रंथों के नियमित अध्ययन पर बल

धन्य हो जातें हैं। किसी दुःखी व्यक्ति की व्यथा कोई अच्छा आदमी सुन ले तो सामने वाले को थोड़ी राहत मिल सकती हैं।

कान में कोई कुण्डल आदि आभूषण धारण करना कान की बाहरी शोभा हो सकती हैं, परन्तु कान से धर्म, अध्यात्म, शास्त्रों आदि की बातें सुनना कान का धार्मिक- भीतरी आभूषण हैं। आँखों से भी ज्ञान प्राप्त होता हैं। अतः हमें आँखो से अच्छी धार्मिक आध्यात्मिक पुस्तकें आदि पढ़नी चाहिए। वह जिससे उत्तम ज्ञान प्राप्त हो सकता हैं। इस प्रकार श्रोत और चक्षु से हमें विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। हमको कानों से सुनकर वह आँखो से देखकर अच्छा ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। हम आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष पर वह आगे भी आचार्य भिक्षु के वह आगम आदि अन्य आचार्यों साधु - संतों के साहित्य को पढ़े तो हमारा कल्याण हो सकता हैं। मस्तिष्क तरंगों का समुद्र है जिसमें अनवरत लहरें उत्तेजित या मंद अपनी ही रवानी में मस्त हो उठती रहती हैं। हमारे चिंतन का रंग जैसे रंग का चश्मा होता हैं वैसे ही सकारात्मकता का या नकारात्मकता का होता हैं। वह इसमें सृजन का या विध्वंस का, ईर्ष्या का या प्रमोद भाव का, मित्रता का या रंजिश का, इंसानियत का या वैहषिपन का आदि समावेश होता हैं। यह हमारे सब रहन सहन और परवरिश पर और आहार निहार आदि पर निर्भर होता हैं। अतः हम श्रेय और हितकर को ग्रहण करने का प्रयास करें। यही हमारे लिए काम्य हैं.

प्राचीन एवं आधुनिक शिल्पकला का अद्भुत प्रदर्शन

कटक।

जैन तेरापंथ सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की ओर से निर्मित वस्तुओं की विशाल प्रदर्शनी का समायोजन तेरापंथ भवन कटक में हुआ। मुनि मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में तथा मुनि भव्य कुमार व मुनि जयेश कुमारजी के निर्देशन में लगी अद्भुत हस्तकला का दिगदर्शन कर प्रत्येक देखने वाले महानुभाव दातों तले अंगुली दबाये बिना नहीं रह सके। तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ कन्या मंडल, कटक द्वारा प्रस्तुत प्रदर्शनी में प्रथम दिन ही कटक के सैकड़ों जन फिर चाहे किसी वर्ण कौम के हो उसे देखकर अभिभूत हुए है। इस प्रदर्शनी में चित्रकला के माध्यम से जीवन दर्शन आत्मदर्शन तथा व्यवहार दर्शन को प्रस्तुत किया गया है। सूक्ष्म लिपि के संसार का करिश्मा कुछ अजब ही परिवेश में है। सूक्ष्म अक्षरों की लिखावट में सभी धर्मो के प्रतीक चिन्हों में हजारों-हजारों अक्षरों का भव्य समायोजन है। हस्तकला प्रदर्शनी में तेरापंथ के प्रथम आचार्य से लेकर वर्तमान आचार्य तक की लिपि का प्रस्तुतिकरण प्राचीनता और नवीनता का संगम है। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमारजी ने कहा - प्रदर्शनी में हस्तशिल्प के अनेक प्रकारों को दर्शाया गया है। जिस में चित्रकला, लिपिकला, सूक्ष्माक्षर कला, जीवन की सुरम्यता का बोध, वस्त्र सिलाई के कई प्रकार पात्रों की

सूक्ष्म लिपि, चित्रकला और धार्मिक प्रतीकों की अनोखी झलक

रंगाई के साथ विशिष्ट लिपिमय चित्रांकन बुद्धि परीक्षा का प्रयोग, पीपल के पत्तों पर कलात्मक चित्रों का प्रकटीकरण जीवन मूल्यों को जागृत करने के लिए संदेशों का आभास है। प्रदर्शनी के मुख्य निर्देशक एवं विशिष्ट कला संरक्षक मुनि भव्य कुमार ने प्रदर्शनी में प्रस्तुत सामग्री का विस्तृत विवेचन करते हुए कहा कि यह उपक्रम कलात्मक जीवन जीने की प्रेरणा के साथ एकाग्रता के विकास का संबोध प्रदान करता है। मुनि जयेश कुमार ने कला के प्राचीन इतिहास को बता वर्तमान युग की समस्याओं के संदर्भ में उन कलाओं में छिपे प्रेरक संदेशों को प्रकट किया। हस्तकला प्रदर्शनी का उद्घाट न सांसद भर्तृहरि महताब व विशिष्ट सहयोगी मोहनलाल सिंघी ने किया। प्रदर्शनी का अवलोकन कर सांसद महोदय ने कहा- श्रद्धा भक्ति और संयम में रहने वाले व्यक्तियों द्वारा बनाए गये ये चित्र और कला से जुड़ी संस्कृति भारतीय मूल्यों को विकसित करती है। उत्कल की धरा में इस प्रकार की प्रदर्शनी का उद्घाट न कर ने का अवसर सौभाग्य से प्राप्त हुआ। हर मानव ऐसी कला को देख जीवन को पवित्र बनाए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कार्डियोलॉजी विशेषज्ञ सत्यनारायण राउतराय व विशिष्ट अतिथि भाजपा राज्य सचिव स्मृति पटनायक ने प्रदर्शनी के देख प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा- इस प्रदर्शनी में भारत की सनातन संस्कृति को कला के माध्यम से जो दिखाया गया है। वह जीवन्त इतिहास है। यदि इस कला को जिले के सभी स्कूलों, कोलेजों के विद्यार्थियों को दिखाया जाए तो उनके भावी जीवन को नई दिशा मिल सकती है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

बाल मन में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना का बीजारोपण

तिरुपुर।

तीन दिवसीय आवासीय एवं आध्यात्मिक सत्र संपन्न

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के तत्वावधान में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सिद्ध प्रभा जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में तीन दिवसीय 'संस्कार निर्माण शिविर का सफल आयोजन किया गया।

इस शिविर का मुख्य उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन, अहिंसा, संयम, आध्यात्मिक चेतना तथा व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना था।

शिविर में 39 ज्ञानार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। साध्वी सिद्ध प्रभा जी ठाणा-4 ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन 'ELEVATE YOUR LIFE' और 'AHA OR SWAHA' के माध्यम से बच्चों को सकारात्मक सोच, क्रोध पर नियंत्रण, मैत्रीभाव और अपनी गलतियों से सीख लेकर जीवन में आगे बढ़ने का संदेश दिया।

साध्वीवृंद द्वारा 'जैसा संग वैसा रंग' एवं 'नो योर बॉडी' जैसे विषयों पर प्रेरक प्रसंगों एवं कहानियों से बच्चों को मार्गदर्शित किया गया। मुख्य प्रशिक्षिका श्वेता पीपाड़ा ने 'ट्रिपल R थ्योरी' द्वारा स्मरणशक्ति (Memory) बढ़ाने के सहज तरीके, 'होलिस्टिक पर्सनालिटी डेवलपमेंट' तथा 'KNOW YOUR BRAIN' सत्रों के ज़रिए बच्चों के बौद्धिक व भावनात्मक संतुलन का मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही, विशेष आमंत्रित वक्ता वैभव नाहटा द्वारा लिए गए 'CHAMPION IS YOU' सत्र को बच्चों ने खूब सराहा। समापन सत्र में अभिभावकों की गरिमामय उपस्थिति रही, जहाँ बच्चों ने शिविर से मिले अपने अनुभवों को साझा किया।

सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रमाण पत्र एवं प्रोत्साहन उपहार प्रदान किए गए तथा मुख्य प्रशिक्षिका का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के संयोजक संतोष सिंघवी ने शिविर को सफल बनाने में अमूल्य योगदान देने वाले सहसंयोजक मुकेश कोठारी, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, कार्यकर्ताओं, अभिभावकों एवं बच्चों के प्रति आभार व्यक्त किया।

निरंतर उत्कृष्ट सेवाओं के लिए युवा संगठन का अभिनंदन

विजयनगर।

राष्ट्रीय स्तर पर मिली उपलब्धि पर मनाया गया गौरव उत्सव

तेरापंथ युवक परिषद् को अभातेयुप के 60वें राष्ट्रीय अधिवेशन में लगातार तीसरी बार सर्वश्रेष्ठ परिषद् के सम्मान से अलंकृत होने के गौरवपूर्ण अवसर पर तेरापंथ सभा भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि विनीत कुमार जी ठाणा-2 द्वारा मंगलाचरण से हुई। मुनिश्री विनीत कुमार जी ठाणा-2 ने वर्तमान टीम और गत टीम के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना की। तत्पश्चात तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पवन बैद ने सबका स्वागत करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित 60th अधिवेशन संवर्धन की जानकारी देते हुए बताया की तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर को 374 शाखा में सर्वश्रेष्ठ परिषद से सम्मानित किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भंवरलाल मांडोत, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष महिमा पटवारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महेंद्र टेबा, तेरापंथ युवक परिषद संस्थापक अध्यक्ष सुशील चोरड़िया और अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की ओर से शाखा प्रभारी आलोक छाजेड, संगठन मंत्री रोहित कोठारी और अभातेयुप अध्यक्ष पवन मंडोत ने सबको बधाई दिया। कार्यक्रम में गत टीम का प्रबंध मंडल,वर्तमान प्रबंध मंडल, पूर्व अध्यक्ष, परामर्शक कार्यकारीणी सदस्य परिषद सदस्य और श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमलेश दक और आभार निवर्तमान अध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

दृढ़ मनोबल और संकल्प से ही पूर्ण होता है आत्मसाधना का मार्ग

बालोतरा।

परमार्थ पथ पर अग्रसर मुमुक्षु का अभिनंदन

प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में, तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा पारमार्थिक शिक्षण संस्था प्रवेश हेतु स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात सीमा सालेचा का मंगल भावना समारोह मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा-आज अंकुरित वैराग्य-बीज को पुष्पित और पल्लवित करने के लिए सीमा गुरु चरणों में जा रही है। वैराग्य पथ वीरों और शक्तिशालीयो का पथ है।

उन्होंने कहा भगवान महावीर की कल्याणी वाणी- 'जाए सद्धाए निक्खंतो तमेव अणुपालिया' को जीवन का आदर्श बनाकर आगे बढ़ना है। आज सीमा का एक संकल्प पूर्ण हो रहा है। हर व्यक्ति का स्वतंत्र संकल्प होता है। संकल्प पूर्ति,लक्ष्य प्राप्ति में अनेक बाधाएं आ सकती है। रिश्तों और परिवार का मोह अवरोध पैदा कर सकता है, पर खुद के पौरुष और वैराग्यभाव से सारी परिस्थितियां अनुकूल बन जाती है। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा - प्रबल वैराग्यभावना देखकर पारिवारिक जन इस मार्ग पर बढ़ने के लिए सहयोगी बने हैं।

परिषद भी स्वार्थ के कारण परमार्थपथिकों को विचलित न करें। परिषद को प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्होंने कहा- हर अभिभावक अपनी संतान को सत्य प्रशिक्षण दें, वैराग्य के मार्ग पर बढ़ने वाली आत्माओं को, संयम चेता बच्चों को प्रोत्साहित करें, यह आवश्यकताहै। महिला मंडल ने मंगलभावना-संगान किया। तेरापंथ सभा मंत्री मोहन बाफना, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री नवीन सालेचा, महिला मंडल अध्यक्षा चंचल भंडारी, पारस सालेचा, महेन्द्र चौपड़ा ने सीमा के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की। सीमा ने अपने उद्गार में कहा- शासनश्री साध्वी सत्य प्रभा जी एवं मुनि सुमति कुमार जी की प्रेरणा से वैराग्य बीज मन में प्रस्फुटित हुआ और प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा सिंचन मिला मेरी भावना साकार हुई।

पारिवारिक सदस्यों द्वारा संस्कारों का सिंचन मिला मेरी माँ हर वक्त पीलर बनकर मेरा हौसला बढ़ाती रही। साध्वी सुदर्शन प्रभा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने सामूहिक-गीत के द्वारा आध्यात्मिक मंगलकामना की। सभा सहमंत्री राजेश बाफना ने कुशल मंच संचालन किया।

त्याग और संयम के साधकों का सम्मान समारोह

कांकरिया।

कठोर साधना की अनुमोदना में उमड़ा श्रावक समाज

शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वी जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद पूर्व द्वारा तेरापंथ भवन, कांकरिया में भव्य तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत एवं प्रबंध मण्डल, अभातेयुप के साथी, सभा पदाधिकारीगण, तेयुप अहमदाबाद पूर्व के पदाधिकारी एवं सदस्यगण तथा समाज के गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी आत्मप्रभा जी के उद्बोधन से हुआ।

साध्वी जी के पावन सान्निध्य में तपस्या के आध्यात्मिक महत्व को रेखांकित करते हुए तपस्वियों के त्याग, संयम एवं आत्मबल की अनुमोदना की गई। समारोह में 8 उपवास से अधिक की तपस्या करने वाले तपस्वी भाई-बहनों का भावपूर्ण अभिनंदन किया गया। सभी तपस्वियों को क्रमशः आमंत्रित कर उपस्थित अतिथियों एवं पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत सहित उपस्थित महानुभावों ने तपस्वियों के त्याग, तप एवं दृढ़ संकल्प की सराहना करते हुए उनके आध्यात्मिक पुरुषार्थ की अनुमोदना की। समारोह में उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए तपस्वियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद् के सहमंत्री हर्ष सिंघी ने किया।

कन्याओं में आत्मविश्वास और क्षमता संवर्धन के लिए विशेष सत्र

विजयनगर।

दैनिक जीवन में पारिवारिक मूल्यों और संस्कारों का महत्व

तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में 'PEECHE THE DEKHO' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम मुनिश्री विनीत कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

मुनिश्री ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि हमें अपने माता-पिता को केवल विशेष दिनों पर ही नहीं, बल्कि वर्ष के प्रत्येक दिन महत्व देना चाहिए। उन्होंने कन्याओं को धर्म से जुड़ने के लिए प्रेरित किया महिला मंडल अध्यक्षा महिमा पटावरी ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

मंडल की मंत्री सरिता जैन के साथ अन्य महिलाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रशिक्षक Adithya Mandoth, Prov. National CPS Trainer रहे। सत्र में Inspiration, Humour, Interaction, Real Life Examples एवं Personal Growth के साथ विभिन्न रोचक एवं इंटरैक्टिव गतिविधियाँ करवाई गईं, जिनमें कन्याओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इन गतिविधियों एवं संवाद के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने, आत्मविश्वास बढ़ाने और व्यक्तिगत विकास के लिए प्रेरित किया गया। पूरा सत्र उत्साह, सकारात्मकता और सीख से भरपूर रहा।

MELANGE ONE
YOUR PRIVATE ESTATE IN THE SKY

युवाचार्यवर! चयन तुम्हारा,
भाग्य खिला है आज हमारा।
महाश्रमण के अंतेवासी,
बने संघ के शुभ्र सितारा॥



THE
CROWN
OF URBAN LIVING

WHERE LUXURY MEETS A HIGHER LIFESTYLE

LIMITED EDITION
3 & 4 BHK
SKY VILLAS

Starting ₹3.70 Cr*
RR NAGAR

100% Vastu Compliant
200 Meters from RR Nagar Metro
75% Open Space
25+ Amenities

CRAFTED BY
VAISHNODEVI
GROUP OF COMPANIES

* T&C APPLY | ARTIST'S IMPRESSION

Book a Visit to Our Personalised Experience Centre **+91 7026006515**

Scan to visit our corporate office

Scan to submit your enquiry

Disclaimer: Artistic impressions only. Specifications, amenities, dimensions, features, and prices are subject to change as per approvals without prior notice. T&Cs Apply. RERA No.: **PRM/KA/RERA/1251/310/PR/230126/008425.**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026



कोटि कोटि वंदन-अभिनंदन

अभिनंदन वंदन स्वीकारो, युवाचार्य 'महावीर'।
'महाश्रमण' करुणा से गण की, चमक रही तकदीर।।

श्रद्धाप्रणत

तेरापंथ युवक परिषद, सूरत



कोटि कोटि वंदन

वंदन-अभिनंदन की घड़िया,
पुलकित दशों दिशाएं।
युवाचार्य पद मनोनयन पर,
जन-जन तुम्हें बधाएं।।

श्रद्धाप्रणत

तेरापंथ युवक परिषद, कांटाबाजी



महाश्रमण प्रभु के पट्टधर तुम,
गण की नव तकदीर हो।
युवाचार्य महावीर मुनि तुम,
भिक्षु की तस्वीर हो।।

श्रद्धाप्रणत

तेरापंथ युवक परिषद, गांधीनगर-दिल्ली



कोटि कोटि अभिवंदन

युवाचार्यवर! चयन तुम्हारा,
भाग्य खिला है आज हमारा।
महाश्रमण के अंतेवासी,
बने संघ के शुभ्र सितारा।।

: श्रद्धाप्रणत :

शांतीदेवी भंसाली
राकेश-धर्मेन्द्र भंसाली

Babosa ©
SAREES

Shree Babosa fab | Babosa Industries Pvt. Ltd.-Surat



कोटि कोटि अभिनंदन

स्फटिक तुल्य यह आभामंडल, देख-देख मन मुदित हुआ है।
संघ शिखर पर जैसे कोई, स्वर्णिम सूरज उदित हुआ है।।

: श्रद्धाप्रणत :

तेरापंथ युवक परिषद, राजाजीनगर

51st आचार्य तुलसी® Acharya Tulsi
A Project By : AKHIL BHARTIYA TERAPANTH YUVAK PARISHAD
For Service to Mankind...

ಡಯಾಗ್ನೊಸ್ಟಿಕ್ ಸೆಂಟರ್, ಡೆಂಟಲ್ ಕೇರ್ & ಡೇ ಕೇರ್
Diagnostic Centre, Dental Care & Day Care
A Jain Social Charitable Organisation SRIRAMPURAM

NABL M(EL)T LABS
NATIONAL ACCREDITATION BOARD FOR TESTING AND CALIBRATION LABORATORIES ★ NABL MEDICAL (ENTRY LEVEL) TESTING LABS PROGRAM ★ INDIA

SCAN FOR DIRECTION

NABL CERTIFIED

ADDRESS : Smt. Manik Bai Dhanraj Shiyal Jainam Building, # 58, M.K.K Road,
Near Sriramapuram Metro Station, Pillar No. 190, Bengaluru - 21
LAB TIMINGS : Monday To Saturday : 7:00 AM to 7:00 PM, Sunday : 7:00 AM to 1:00 PM
MOB : 99869 69229

MANAGED BY : TERAPANTH YUVAK PARISHAD, RAJAJINAGAR
SPACE SPONSOR : JAINAM LAKSHMINARAYANPURAM TRUST (R)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

पारखी नजरें ज्योतिचरण की ढूंढ़ निकाला कोहिनूर,
संघ भाल पर युगों युगों, आलेख लिखे नूतन भरपूर।
युवराजा के राजतिलक से, निश्चिंत बने शिरमोर॥

आओ गुरु महावीर



GULAB
FASHION PVT. LTD.

यशवंत जैन | बसंत जैन | सुशील बोथरा

23, मिलेनियम टेक्सटाईल मार्केट, सूरत-2

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्पः 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

गौरवशाली 35 वर्षों का सफर पूर्ण, संस्था का नया संकल्प

कोलकाता।

सेवा और समर्पण के साथ नए सत्र का शुभारंभ

जैन कार्यवाहिनी का स्थापना दिवस समारोह महासभा भवन स्थित भिक्षु ग्रंथागार में श्रद्धा व उल्लासपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन कार्यवाहिनी की भिक्षु भजन मंडली द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। अणुव्रत उद्बोधन दिवस के अवसर पर आयोजित अणुव्रत महासंगान के अंतर्गत अणुव्रत समिति कोलकाता एवं अणुव्रत समिति हावड़ा के अणुव्रत पदाधिकारियों/कार्यकर्ताओं तथा जैन कार्यवाहिनी के कार्यवाहकों ने सामूहिक रूप से अणुव्रत गीत का सुमधुर संगान किया। अणुविभा के राष्ट्रीय संयुक्त न्यासी रतन दुगड़ ने अपना भावपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किया।

जैन कार्यवाहिनी के संयोजक पंकज दुधोड़िया ने संस्था के वार्षिक प्रतिवेदन का वाचन किया। क्रम को आगे बढ़ाते हुए बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि उदित कुमार जी ठाणा द्वारा प्रेषित पावन संदेश का वाचन संयोजक नवीन दुगड़ ने किया तथा मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन संयोजक डालम गिडिया द्वारा किया गया। समारोह में जैन कार्यवाहिनी के समन्वयक महेन्द्र दुधोड़िया ने संस्था के आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। इसके उपरांत प्रचार-प्रसार संयोजक बसंत पटावरी ने जागरूक कार्यवाहकों की जानकारी दी।

यात्रा संयोजक रंजीत सेठिया ने डायरी लेखन करने वाले कार्यवाहकों का विवरण रखा। संयोजक राजकुमार भादानी ने तपस्या करने वाले कार्यवाहकों की जानकारी साझा की तथा जय सिंह बैद ने भिक्षु भजन मंडली के कार्यवाहकों के नामों की जानकारी सदन के समक्ष रखी। उल्लेखनीय है कि मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी ठाणा के पावन सानिध्य में 27 सितम्बर 1991 को मित्र परिषद् भवन में मात्र 13 सदस्यों के साथ जैन कार्यवाहिनी का गठन हुआ था, जो आज अपने 35 वर्ष पूर्ण कर 36वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। संस्था में चुनाव की प्रक्रिया नहीं है; प्रतिवर्ष 4 संयोजकों में से 2 नए संयोजकों की नियुक्ति जैन कार्यवाहिनी के निर्देशक बजरंग जैन द्वारा की जाती है। इसी परंपरा के अंतर्गत जैन कार्यवाहिनी के समन्वयक महेन्द्र दुधोड़िया ने नए दायित्वों की घोषणा की। कार्यक्रम में समन्वयक, 2 निवर्तमान संयोजकों, हाजरी संयोजक, जागरूक कार्यवाहकों, तपस्या करने वाले कार्यवाहकों, डायरी लेखन करने वाले कार्यवाहकों एवं भिक्षु भजन मंडली के सदस्यों को सम्मानित किया गया। मंच का कुशल संचालन हाजरी संयोजक प्रदीप बैद ने किया। विदित रहे कि जैन कार्यवाहिनी कोलकाता के पूर्व सदस्य मुनि विनोद कुमार जी ठाणा के अलावा संस्था के सदस्य परिवारों से अनेक साधु-साध्वी संघ को समर्पित हुए हैं। इनमें अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ठाणा (सुपुत्रः रणजीत चोरडिया), मुनि मुदित कुमार जी ठाणा (सुपुत्रः बालचंद बोथरा), साध्वी मौलिकयशा जी ठाणा (सुपुत्रीः महेन्द्र दुधोड़िया / भगिनीः पंकज दुधोड़िया), समणी स्वाति प्रज्ञा जी ठाणा (सुपुत्रीः संजय पारख) एवं सुकृतप्रभा जी ठाणा (सुपुत्रीः दीपक नखत) संघ सेवा में समर्पित हैं।

इसके अतिरिक्त कार्यवाहिनी से लगभग 30 कार्यवाहक उपासक श्रेणी में सेवाएं देने गए हैं तथा कई कार्यवाहक केंद्रीय व स्थानीय संघीय संस्थाओं में सक्रिय दायित्व निभा रहे हैं। यह प्रेस विज्ञप्ति जैन कार्यवाहिनी कोलकाता के नवनियुक्त प्रचार-प्रसार संयोजक वीरेंद्र बोहरा द्वारा जारी की गई।

विशुद्ध ज्ञान और सद्गुणों से ही महान बनता है जीवन

सूरत।

सप्ताह भर चले नैतिक जागरण कार्यक्रमों का समापन

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि डॉ. मदनकुमार जी ठाणा के मंगल सानिध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया।

केंद्रीय संस्था अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा तेरापंथ भवन, रेलवे स्टेशन, स्कूल, कॉलेज आदि विविध स्थानों पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आज 'जीवन विज्ञान दिवस' के अवसर पर उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि हर व्यक्ति विकास चाहता है, जिसके लिए श्रद्धा और अनुशासन अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में ज्ञान का बहुत बड़ा मूल्य है; जब विशुद्ध ज्ञान का द्वार खुलता है, तो जीवन आनंद से परिपूर्ण हो जाता है।

मुनिश्री ने आगे कहा संत-साधु आध्यात्मिक चिकित्सक होते हैं, जो शरीर की नहीं बल्कि आत्मा की चिकित्सा करते हैं। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान इस आत्म-चिकित्सा के प्रमुख उपक्रम हैं। वह चारित्रिक विकास एवं सुखमय जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। आचार्यश्री तुलसी ने विश्व को अणुव्रत का दर्शन दिया। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह चरित्र के मुख्य आधार हैं।

धन बढ़ जाने से कोई महान नहीं होता, चरित्र का विकास होने से आदमी महान होता है। इसी प्रकार धन की कमी से कोई दरिद्र नहीं होता वास्तविक दरिद्र वह है जिसके जीवन में चारित्रिक सद्गुण नहीं हैं। जीवन को प्रायोगिक बनाने के लिए उन्होंने चार सूत्रों को अपनाने की प्रेरणा दी।

बाल मन की रचनात्मकता और सकारात्मक सोच का उत्सव

काठमांडू।

विद्यार्थियों ने विविध कलाओं के माध्यम से दिखाया हुनर

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित तथा अणुव्रत समिति काठमांडू के तत्वावधान में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का जिला स्तरीय समारोह भगवान महावीर जैन निकेतन में भव्य रूप से संपन्न हुआ।

नेपाल की धरती पर पहली बार आयोजित इस प्रतियोगिता ने रचनात्मकता, सकारात्मक चिंतन और विद्यार्थियों की अंतर्निहित प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक नया इतिहास रचा। इस प्रतियोगिता में विद्यालय स्तर पर कुल 16 विद्यालयों के 10,000 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जिला स्तरीय प्रतियोगिता में चयनित 32 प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। काठमांडू के प्रतिष्ठित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं समन्वयकों की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय विद्यालय की छात्रा आभा आर. दहाल द्वारा अणुव्रत गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति से हुआ।

अणुव्रत समिति काठमांडू के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चंद बेगानी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अणुव्रत नेपाल के राष्ट्रीय प्रभारी ज्योति कुमार बेगानी उपस्थित रहे। ऑनलाइन द्वारा जुड़े अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सम्मानीय प्रताप दुगड़ तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कुसुम लूनिया ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए नेपाल में इस आयोजन को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया।

नेपाल महासभा के अध्यक्ष दिनेश नौलखा ने अणुव्रत के आदर्शों एवं जीवन में नैतिक मूल्यों की महत्ता पर प्रकाश डाला। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रमेश लूनिया, महिला मंडल की अध्यक्ष संगीता बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष निश्चल लालवानी टीपीफ अध्यक्ष विनीत चौरडिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन महासचिव प्रभात नाहटा ने किया तथा स्वस्ति नौलखा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सादगी, संयम और अनुशासन के अभ्यास का अनूठा दिन

चेन्नई ट्रिप्लीकेन।

किशोरों ने एक दिन के लिए अनुभूत किया साधु जीवन

तेरापंथ भवन में डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ठाणा-2, नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ठाणा के मंगल सानिध्य में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा day like a monk एक दिन साधुपन जैसा अनुभूति शिविर का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में किया गया। दिन भर चले शिविर में उपस्थित बच्चों ने उत्साह पूर्वक संयम जीवन का आनंद एवं अनुभव प्राप्त किया। प्रवचनसत्र में डॉ मुनिश्री ने कहा मुनि जीवन का आनंद अपरिमित होता है क्योंकि इससे आत्मसंयम की प्रेरणा जगाती हैं। जैन धर्म में त्याग को विशेष महत्व दिया जाता है, जीवन में सहजता और सरलता का विकास ही साधुपन कहलाता है। मुनिश्री ने आगे कहा आज के मोबाइल युग में बच्चे संस्कार और सादगी की तरफ ऐसे शिविरों के माध्यम से ही आकर्षित होते हैं। आज का शिविर संयम के भावों का विकास करने में अवश्य सहायक होगा। मुनिवर ने उपसंपदा संकल्प स्वीकार करवाकर दीक्षा विधि संपन्न की। हरीश भंडारी ने योग प्राणायाम तथा मानकचंद रांका ने कायोत्सर्ग कक्षा ली। शिविर का विशेष आकर्षण यह था कि शिविरार्थियों ने जैन मुनि की तरह वेशभूषा पहनी थी तथा पात्र में गोचरी करते हुए भोजन ग्रहण किया तो दिन भर ओघा-रजोहरण एवं मुंहपट्टी के साथ संयम पूर्वक चलने बोलने व खाने-पीने का अभ्यास किया। मुनिश्री ने संयम जीवन की कहानी स्वयं की जुबानी के अंतर्गत मुनि जीवन का महत्व समझाते हुए स्वयं के संयम जीवन की कहानी सुनाई। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ठाणा ने मनुष्य जीवन का क्या लक्ष्य व उद्देश्यों पर विवेचन किया। अर्हत वंदना के पश्चात साधुपन जैसे अनुभव कर रहे मयंक मर्लेचा, ऋत्विक चोरडिया, आरुष चोपड़ा, कुशल जैन व अमृत डागा ने अनुभव सुनाए। इस अवसर पर महासभा के आंचलिक प्रभारी विमल चिपड, जैन विश्व भारती के मंत्री ललित दूगड़, कोषाध्यक्ष गौतम समदड़िया तेयुप अध्यक्ष कोमल डागा, मंत्री श्रीकांत चौरडिया ने शुभकामनाएं प्रकट की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्पः 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

आत्मानुशासन और संस्कारों से ही संभव है वास्तविक सफलता

गंगाशहर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का षष्ठम दिवस 'अनुशासन दिवस' आज अणुव्रत समिति द्वारा आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय घड़सीसर रोड के प्रांगण में मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अणुव्रत समिति के सह मंत्री मनोज छाजेड़ द्वारा मंगलाचरण से किया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में अणुव्रत समिति के कार्यकर्ता विद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थीगण की उपस्थिति रही।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष करणी दान रांका ने बताया कि 'मुख्य वक्ता चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली ने अपने वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत मानव को अपने अनुशासन पर जोर देता है। जब व्यक्ति स्वयं अनुशासित होगा तभी समाज और राष्ट्र सदृढ़ होगा। आगे उन्होंने कहा कि जो अपने कल को बेहतर करना चाहते हैं वह अनुशासन

विद्यालय प्रांगण में संयमित जीवनशैली का आह्वान

से योजना बनाते हैं जिसे अपने जीवन में सफल होना है उसे अनुशासित होकर ही कार्य करना पड़ेगा। अनुशासन और संस्कार को साथ लेकर चलना पड़ेगा क्योंकि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है।'

अणुव्रत समिति के दिलीप सिरोहियों ने बताया कि शाला के प्रधानाचार्य नवल किशोर सैनी ने अणुव्रत समिति के इस प्रयास को सराहा और कहा कि ऐसे आयोजन से छात्र-छात्राओं को एक नई दिशा एक नया मोटिवेशन मिलता है शिक्षक वह है जो बच्चों में अनुशासन का दीप जलाकर अंधकार रूपी अज्ञान को नष्ट करता है प्राचार्य नवल किशोर सैनी ने मानव को मानव से जोड़ने का आह्वान किया। संचालन अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष मनोज सेठिया ने किया। आभार ज्ञापन अध्यक्ष करणी दान रांका ने किया।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नियम और मर्यादा का पालन अनिवार्य

जसोल।

अणुव्रत समिति के तत्वावधान मे आदर्श विधा मन्दिर उच्च प्राथमिक विद्यालय नाकोड़ा रोड़ मे अणुव्रत उद्बोधन का छठा दिवस अनुशासन दिवस समारोह के रूप में मनाया। सर्व प्रथम-मां सरस्वती के शरणो मे दिप प्रज्ज्वलित करते हुए मंगलाचरण के साथ किया। अतिथिगणो को स्कूल की बालिकाओ ने तिलक लगाकर स्वागत अभिनदंन किया। स्कूल के प्रधानाचार्य राजेन्द्र कुमार सैन ने अणुव्रत अतिथिगणो का स्वागत किया। अणुव्रत समिती के प्रचार प्रसार मंत्री डुंगरचन्द बागरेचा ने मंगलाचरण

छात्र-छात्राओं ने ग्रहण किए नैतिक आचरण के संकल्प

संयममय जीवन हो गीत संगान किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष महावीरचंद सालेचा ने स्वागत भाषण व अणुव्रत आचार सहिंता का वाचन जयन्तीलाल जीरावला ने किया, साथ ही अपने विचार व्यक्त करते कहा कि अनुशासन जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की कुंजी है, अनुशासन का अर्थ है जीवन मे नियमों, समय और आदर्श आचरण का पालन करना है। इस कार्यक्रम का सफल संचालन अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने किया।

धार्मिक सिद्धांतों और प्रामाणिकता की परीक्षा संपन्न

जलगांव।

ज्ञानशाला के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रशिक्षिका परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व सभा अध्यक्ष द्वारा परीक्षार्थियों को नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ सुनाया गया। इस परीक्षा में कुल 4 प्रशिक्षिकाओं ने सहभागिता की, जिसमें विज्ञ – 2, विशारद – 1 एवं स्नातक – 1 परीक्षार्थी ने परीक्षा दी। परीक्षा के प्रश्नपत्र सभा अध्यक्ष मानक चांद बैद, शेष महाराष्ट्र आंचलिक संयोजिका नम्रता सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा विनीता समदरिया एवं युवक परिषद अध्यक्ष आकाश चोपड़ा की उपस्थिति में खोले गए।

स्वस्थ एवं नैतिक समाज के लिए नशामुक्त जीवन का आह्वान

चिकमगलूर।

अणुव्रत समिति द्वारा नशामुक्ति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से रविवार को भव्य रैली का आयोजन किया गया। रैली में ब्रह्माकुमारी संस्था, माय भारत सहित विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों एवं नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। लगभग ढाई किलोमीटर की रैली तालुक कार्यालय से एम.जी. रोड होते हुए तेरापंथ सभा भवन पहुंची।

रैली के समापन अवसर पर साध्वी पुण्ययशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में मंगलाचरण एवं नैतिकता गीतिका की प्रस्तुति युवक परिषद, महिला मंडल एवं

जन-जागरुकता रैली में विभिन्न संस्थाओं ने ली सहभागिता

तेरापंथ सभा के सदस्यों द्वारा की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी भंवर सिंह मीणा उपस्थित रहे। उन्होंने नशामुक्ति अभियान की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि भारत सरकार भी नशामुक्ति के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा, 'सबसे पहले हमें स्वयं नशामुक्त होना होगा, तभी हम दूसरों को नशामुक्ति के लिए प्रेरित कर सकेंगे।' साध्वी पुण्ययशा जी ने अपने उद्बोधन में नशामुक्ति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को नशे से दूर रहने और स्वस्थ एवं नैतिक जीवन अपनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति अध्यक्षा मंजूबाई भंसाली ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मदन गादिया ने संचालन किया तथा गौतम आच्छा ने सभी अतिथियों एवं सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, TPF तथा ब्रह्माकुमारी एवं माय भारत के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक सहयोग एवं सहभागिता प्रदान की। सभा के अध्यक्ष महेंद्र डोषी आदि अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

ऐतिहासिक पुल से उठी नशामुक्ति की गूंज

हावड़ा ।

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 की विशेष प्रेरणा से अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित 'नशामुक्त परिवार' मैराथन 2026 का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा ऐतिहासिक हावड़ा ब्रिज के निकट से योगक्षेम विहार तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पश्चिम बंगाल सरकार में संसदीय कार्य और शहरी विकास के राज्य मंत्री उमेश राय, अणुविभा परिवार से राष्ट्रीय प्रचार प्रसार मंत्री पंकज दूधोडीया, उत्तर हावड़ा सभा अध्यक्ष संदीप डागा एवं टीम, उत्तर हावड़ा ट्रस्ट के मंत्री बुधमल लुनिया, तेयुप उत्तर हावड़ा - साउथ हावड़ा - लिलुआ के पदाधिकारी, भारत सरकार युवा एवं खेल मंत्रालय के पदाधिकारी

सैकड़ों धावकों ने लगाई संकल्प की दौड़

की गरिमामय उपस्थिति रही। मैराथन का आयोजन पश्चिम बंगाल सरकार के मंत्री उमेश राय द्वारा सामूहिक राष्ट्र गान के पश्चात अणुव्रत ध्वज दिखा कर दौड़ प्रारंभ की गई जो कि योगक्षेम विहार तक आयोजित हुई। मैराथन में लगभग 200 से अधिक संभागियों ने सहभागिता दर्ज करवाई। योगक्षेम विहार पहुंचने पर मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सानिध्य में अणुव्रत गीत के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनिश्री ने इस अवसर पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए सभी को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने अपने भाव प्रकट करते हुए सभी का स्वागत किया। मैराथन में प्रथम 20 पहुंचे सभी सहभागीगण को मेडल से सम्मानित किया गया। इस मैराथन को सफल बनाने में संयोजक सुनीता बैद, श्वेता चौरडिया सहित अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने अपना श्रम नियोजन किया। मैराथन को सफल बनाने में उत्तर हावड़ा सभा, ATDC उत्तर हावड़ा, तेयुप उत्तर हावड़ा, साउथ हावड़ा, लिलुआ, उत्कृष्ट परिवार, JITO परिवार, माई भारत पोर्टल के संभागियों, जैन कार्यवाहिनी, शासन प्रशासन का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री बिरेंद्र बोहरा, आभार पारस बरडिया ने किया।

नुक्कड़ नाटक के जरिए सामाजिक बुराई पर करारा प्रहार

गुवाहाटी ।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में पंचम दिवस – नशामुक्ति दिवस के अवसर पर अणुव्रत समिति द्वारा एक प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। इस नुक्कड़ नाटक ने उपस्थित लोगों के बीच नशे के दुष्परिणामों को लेकर गहरी जागरूकता पैदा की। नाटक का निर्देशन व मुख्य अभिनय अवकाश कुमार जम्मड़ ने किया। नाटक में अब्दुल कय्यूम ने भी अभिनय किया। दोनों कलाकारों ने अपने सशक्त अभिनय, भावपूर्ण संवाद अदायगी और प्रभावशाली हाव-भाव के माध्यम से नशे की गिरफ्त में फंसते व्यक्ति, उसके परिवार तथा समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। समिति की

कलात्मक अभिव्यक्ति से दिया नशामुक्त समाज का संदेश

मंत्री रंजना बरडिया ने बताया कि नुक्कड़ नाटक के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया कि नशा केवल एक व्यक्ति के जीवन को ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार और समाज के भविष्य को प्रभावित करता है। अभिनय के दौरान कलाकारों के चेहरे के भाव, संवादों की गंभीरता और परिस्थितियों के अनुरूप उनकी भावनात्मक प्रस्तुति ने दर्शकों को भीतर तक झकझोर दिया। नुक्कड़ नाटक का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि आमजन को यह समझाना था कि नशामुक्त समाज का निर्माण प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इसके के माध्यम से युवाओं को नशे से दूर रहने, परिवारों को अपने बच्चों के प्रति जागरूक रहने तथा समाज के प्रत्येक वर्ग को नशे के खिलाफ सामूहिक रूप से आवाज उठाने का संदेश दिया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय चौरड़िया, अणुविभा के कार्यकारिणी सदस्य आदि उपस्थित थे।

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्पः 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

नशा मुक्त परिवार मैराथन 2026 का आयोजन

जसोल।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्या साध्वी कुंदनप्रभाजी के सान्निध्य में व नगरपालिका जसोल अध्यक्ष निर्मला देवी प्रजापत, उपाध्यक्ष रमेश कुमार भन्साली, पार्षद मंजुदेवी छाजेड, महासभा जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचन्द सालेचा, अणुव्रत समिति प्रभारी भूपतराज कोठारी, समिति अध्यक्ष महावीरचंद सालेचा आदि अतिथियों ने हरि झंडी दिखाकर प्रातः 9.30 बजे साध्वी के मंगल पाठ सुनकर पुराणा ओसवाल भवन,जसोल से सुभारम्भ हुआ।

मंत्री सफरु खान ने बताया कि रैली में पर्यावरण सुरक्षा सम्बंधित पर जानकारी दी। नवकार शिक्षण संस्थान जसोल के बालक बालिकाओं ने भाग लिया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तहत नशामुक्ति दिवस मनाया गया

गंगाशहर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति, गंगाशहर द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का चतुर्थ दिवस 'नशामुक्ति दिवस के रूप में मनाया गया। अध्यक्ष करणीदान रांका ने बताया कि इस दिवस को प्रातः नशामुक्ति जागरूकता हेतू मेराथन का आयोजन किया गया। मेराथन तेरापंथ भवन से आरम्भ हुईं, जिसे समिति अध्यक्ष करणीदान रांका, मंत्री कन्हैयालाल बोथरा, आचार्य तुलसीशंति प्रतिष्ठान के मंत्री दीपक आँचलिया, तेरापंथी सभा के मंत्री जतन लाल संचेती, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष रतन छल्लाणी, तेयुप अध्यक्ष देवेंद्र डागा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। बोथरा भवन में विराजित मुनि अमृत कुमारजी ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। समिति के मंत्री एडवोकेट कन्हैयालाल बोथरा ने बताया कि 'मेराथन से पूर्व तेरापंथ भवन के प्रांगण में अपने मंगल सन्देश में साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने कहा कि आज कि पीढ़ी नशे से ग्रस्त होती जा रही है, ये सभी देश के भविष्य है। इस पीढ़ी को शसक्त बनाना राष्ट्र को मजबूत बनाना है। नशे के कारण समाज में संस्कारों का ह्यास होता जा रहा है, ये चिंतन का विषय है। साध्वी श्री सभी को नशामुक्ति का संकल्प दिलवाया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष मनीष बाफना ने किया।

'फिट युवा - हिट युवा' मैराथन दौड़ का आयोजन

कटक।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह एवं Fit Yuva – Hit Yuva अभियान के अंतर्गत युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली, फिटनेस एवं नशामुक्ति के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से तेरापंथ युवक परिषद्, कटक एवं अणुव्रत समिति, कटक के संयुक्त तत्वावधान में 'Fit Yuva – Hit Yuva Marathon' का आयोजन किया गया। 'नशामुक्त परिवार, नया दौर – नई दौड़' के संदेश के साथ आयोजित इस मैराथन में युवाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए स्वस्थ एवं नशामुक्त समाज के निर्माण का संकल्प लिया। मैराथन के माध्यम से फिट युवा – सशक्त समाज एवं नशामुक्त युवा का संदेश जन-जन तक पहुँचाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुभाष सिंह, मेयर, कटक एवं रोशन कुमार (Youth Officer, My Bharat, Cuttack) की गरिमामय उपस्थिति रही। साथ ही डॉ. सुभाषिस मोहंती, Medical Officer, 42 MUJA, Cuttack की विशेष उपस्थिति एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मैराथन में तेरापंथ युवक परिषद्, अणुव्रत समिति तथा विभिन्न संस्थाओं के युवाओं ने उत्साह एवं अनुशासन के साथ भाग लिया। पूरे आयोजन के दौरान युवाओं में विशेष ऊर्जा एवं जोश देखने को मिला। कार्यक्रम को सफल बनाने में कटक की विभिन्न संस्थाएं जैसे की स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया, YMCA, मारवाड़ी महिला समिति, एंजेल्स, FTS एवं लायंस पर्ल, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, किशोर मंडल, अणुव्रत समिति एवं परिषद के सदस्यों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

नशामुक्ति : स्वस्थ और संस्कारित जीवन का आधार

गुवाहाटी।

स्वस्थ समाज के निर्माण में परिवार, विद्यालय और युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

नशा मनुष्य के जीवन को भीतर से खोखला करने वाली एक ऐसी बुराई है, जो धीरे-धीरे व्यक्ति की शारीरिक शक्ति, मानसिक शांति, पारिवारिक सुख और सामाजिक प्रतिष्ठा को नष्ट कर देती है। नशे की शुरुआत प्रायः शौक या मित्रों के आग्रह से होती है, लेकिन आगे चलकर वही आदत व्यक्ति की स्वतंत्रता छीन लेती है।

नशामुक्ति दिवस हमें यह संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि हम स्वयं नशे से दूर रहें और दूसरों को भी नशामुक्त जीवन के लिए प्रेरित करें। नशा केवल व्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि उसका दुष्प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है।

नशे के कारण परिवार में तनाव, आर्थिक कठिनाइयाँ और आपसी विश्वास की कमी उत्पन्न हो सकती है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी को नशे से बचाना आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। युवाओं की ऊर्जा राष्ट्र की शक्ति है। यदि यही ऊर्जा नशे में नष्ट होने के बजाय शिक्षा, संस्कार, सेवा, साधना और रचनात्मक कार्यों में लगे, तो समाज और राष्ट्र दोनों का भविष्य उज्ज्वल बन सकता है। अणुव्रत आंदोलन ने व्यक्ति के चरित्र निर्माण और संयमित जीवन को विशेष महत्त्व दिया है।

नशामुक्ति केवल किसी एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि जीवनभर निभाया जाने वाला संकल्प है।

व्यक्ति यदि अपने मन पर नियंत्रण रखना सीख जाए और बुरी आदतों के प्रति दृढ़ता से 'नहीं' कहना सीख ले, तो नशे की जकड़न से मुक्त होना संभव है। आत्मसंयम, विवेक और अच्छी संगति नशामुक्त जीवन की मजबूत आधारशिला हैं।

अणुव्रत कोई धर्म नहीं, मानवीय आचार संहिता है

बालोतरा।

प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में बालोतरा तेरापंथ भवन में अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तहत 'साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस' का आयोजन हुआ। प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने अपने उद्बोधन में कहा अणुव्रत कोई धर्म नहीं मानवीय आचार संहिता है। धर्म आत्मा की पवित्रता है जब देश आजाद हुआ, तब आचार्यश्री तुलसी ने ' असली आजादी अपनाओ' का घोष दिया था। अणुव्रत की गूंज गरीबों की झुग्गी झोपड़ियों से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंचाई। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा धर्म सम्प्रदाय निष्पेक्ष होना चाहिए, पंथ निरपेक्ष होना चाहिए। हमारा विश्वास सह आसन, सह चिन्तन और सह क्रियान्वयन में है। अणुव्रत हिन्दु धर्म नहीं संस्कृति है। साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना पुष्ट बने, यह आज की शख्त जरूरत है। सौहार्द पूर्ण वातावरण के लिए सबको दृढ़ संकल्पित होना होगा। साध्वी प्रोफेसर मंगल प्रज्ञा ने कहा- आज परिवार, समाज में प्रेम पवित्रता और सामंजस्य का वातावरण बने, यह अपेक्षित है। चारित्रिक ह्रास को मिटाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए वैचारिक क्रांति करनी होगी। जरूरत है मुसलमान सच्चा मुसलमान बने, हिन्दु सच्चा हिन्दु बने और जैन सच्चा जैन बने। ऐसा लग रहा है - आदमी का मात्र छाया दिखाई दे रहा है, इंसानियत की रोशनी गुम होती जा रही है। उन्होंने कहा- युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने नैतिकता, नशामुक्ति और सद्भावना की सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा यात्रा के दौरान अलख जगाई। हजारों हजारों लोगों ने प्रेरणा पाकर अपने जीवन की दशा और दिशा बदली है। महापुरुष पवित्र राजमार्ग बताते हैं पर उस पर चलने के लिए पौरुष-दीप, संकल्प-दीप हाथों में थामना पड़ता है। इस अवसर पर - वर्धमान आदर्श विद्या मंदिर के प्रिंसिपल पूनमचन्द सुधार ने कहा- मानव कल्याण और सद्भाव हम सबकी जिम्मेवारी है। मौलवी सैयद ने कहा- अणुव्रतधर्म आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त एक वरदान है, जो भाईचारा सिखाता है। ब्रह्मा कुमारी उमादीदी ने कहा- नैतिकता की स्थापना और मूल्यों के स्रोत से कनेक्ट होना आवश्यक हैं। उपासक मनोज ओस्तवाल ने मंगल संगान किया। साध्वी सुदर्शन प्रभाजी, साध्वी डॉ राजुलप्रभाजी एवं साध्वी डॉ चैतन्यप्रभाजी ने 'प्राण, प्राण में शांति दीप जल जाए' का सामूहिक संगान किया। अणुव्रत समिति की ओर से आगन्तुक महानुभावों का सम्मान किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष कमल कुहाड़ ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' आयोजित

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चतुर्थ दिन 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' का आयोजन अणुव्रत समिति, हावड़ा - कोलकाता द्वारा योगाक्षेम सभागार में किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार ने कहा पर्यावरण का अर्थ है जो चारों ओर से घिरा हुआ। जहाँ पर्यावरण सुरक्षित है वहाँ संस्कृति सुरक्षित है और जहाँ संस्कृति सुरक्षित है वहाँ आनंद ही आनंद है। बदलते माहोल में पर्यावरण असुरक्षित होता जा रहा है। जल, जंगल, जमीन के दुरुपयोग से पर्यावरण प्रदूषण की और अधिक जटिल बना दिया है। जैन धर्म में छह जीव निकायों के संयम की बात कही गई है। प्राकृतिक उपहारों को दूषित व दुरुपयोग न करें। अणुव्रत का संकल्प 'पर्यावरण को प्रदूषित न करने का संकल्प' है। वैचारिक प्रदूषण से मुक्त बने। जैन साधु पर्यावरण का सच्चा मित्र होता है। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया जा रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए कहा - अणुविभा द्वारा 242 अणुव्रत समितियों व मंचों के माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता को जन जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। अणुव्रत शब्द छोटा हो सकता है पर विचार बहुत बड़े हैं। हम पर्यावरण के प्रति जागरूक रहें। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमारजी के मंगलाचरण से हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

नैतिकता का संदेश, संयम का संकल्पः 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पर देश भर में उमड़ा अपार उत्साह!

प्राकृतिक उपहारों को दूषित न करने का लिया गया संकल्प

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चतुर्थ दिन 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' का आयोजन अणुव्रत समिति, हावड़ा - कोलकाता द्वारा योगाक्षेम सभागार में किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार ने कहा पर्यावरण का अर्थ है जो चारों ओर से घिरा हुआ। जहाँ पर्यावरण सुरक्षित है वहाँ संस्कृति सुरक्षित है और जहाँ संस्कृति सुरक्षित है वहाँ आनंद ही आनंद है। बदलते माहोल में पर्यावरण असुरक्षित होता जा रहा है। जल, जंगल, जमीन के दुरुपयोग से पर्यावरण प्रदूषण की और अधिक जटिल बना दिया है। जैन धर्म में छह जीव निकायों के संयम की बात कही गई है। प्राकृतिक उपहारों को दूषित व दुरुपयोग न करें। अणुव्रत का संकल्प 'पर्यावरण को प्रदूषित न करने का संकल्प' है। वैचारिक प्रदूषण से मुक्त बने। जैन साधु पर्यावरण का सच्चा मित्र होता है। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए कहा - अणुविभा द्वारा 242 अणुव्रत समितियों व मंचों के माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता को जन जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। अणुव्रत शब्द छोटा हो सकता है पर विचार बहुत बड़े हैं। हम पर्यावरण के प्रति जागरूक रहें। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमारजी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री विनीत कोठारी ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पंचम दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

चेन्नई।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई की आयोजना में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत पंचम दिवस नशामुक्ति दिवस का कार्यक्रम चेन्नई महानगर के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया।

ट्रिप्लिकेन तेरापंथ भवन में अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि श्री डॉ पुलकित कुमारजी ठाणा- 2 एवं किलपॉक तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशा जी ठाणा- 4 के सान्निध्य में मंचीय कार्यक्रम हुए। मुनिश्री पुलकितकुमारजी ने कहा कि परिवार के एक सदस्य के नशे की लत में रहने से पुरे परिवार की सुख शांति बिगड़ जाती हैं। नशा नाश का कारण बनता हैं। वह परिवार सामाजिक, आर्थिक, मानसिक हर रुप से कमजोर पड़ जाता है। हर व्यक्ति को सप्त कुव्यसनों से मुक्त रहना चाहिए, जिससे व्यक्ति स्वयं तो सुखी बनता ही है और समाज, राष्ट्र भी उन्नत, समृद्ध बनता हैं। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि अणुव्रत एक स्वच्छ आचार संहिता है। उससे जुड़कर व्यक्तित्व में निखार आ जाता हैं। नशे से मुक्त व्यक्ति- मुक्ति को भी प्राप्त कर सकता।

जहां समिश्रित भोजन बनता है, उन होटलों में खाना खाने से बचे। अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने रविवार को समायोजित मैराथन दौड़ एवं मंत्री कुशल बाँठिया, सहमंत्री कमल सामसुखा ने अणुव्रत वाटिका उद्घाटन की जानकारी निवेदित की। उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द दाँती ने नशामुक्ति पर अपने विचार व्यक्त किए।

- आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चिाहए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चिाहए।
- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

-आचार्य श्री महाश्रमण

व्यसनों के त्याग हेतु जन-जागरण अभियान

उत्तर हावड़ा ।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा - 3 के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के पांचवे दिन नशामुक्ति दिवस का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा, कोलकाता द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा - नशा पतन की निशानी है। सप्त व्यसन जुआ, मांसाहार, शराब, वेश्या-गमन, शिकार, चोरी और परस्त्रीगमन का त्याग करना चाहिए ये जीवन की बुराइयाँ हैं।

नशे के दुष्प्रभावों से मुक्ति और स्वस्थ समाज का निर्माण

इनके सेवन से धर्म का नाश होता है और जीवन पतित होता है। नशे के कारण व्यक्ति बीमारियों को निमंत्रण देता है। कलह, झगड़ा परिवार में आमंत्रित करता है। जीवन में अशांति तनाव को बढ़ावा देता है। आज देश में व्यसन, नशा, ड्रग्स सेवन की स्थितियाँ चिंताजनक बनी हुई हैं। नशे के घातक परिणाम अवसाद, अकर्मण्यता, आलस्य, मतिभ्रम, स्नायविक दुर्बलता, आदि के रूप में सामने आ रहे हैं जिससे व्यक्ति की कार्यक्षमता कमजोर होती है। अणुव्रत के नियम नशामुक्ति की प्रेरणा देता है। अनुव्रत आंदोलन के जरिये लाखों लोग नशामुक्त बने हैं। सभी लोग नशामुक्त रहें और परिचितों को भी नशामुक्त करने का प्रयत्न करें। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा - नशा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की उन्नति को अवरुद्ध करता है। अणुव्रत के संकल्प के अनुसार दूसरों को नशामुक्त बनायें। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत व आभार अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

संप्रदाय सिर्फ एक है मानव संप्रदाय और इसका धर्म मानवता

गंगाशहर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का तृतीय दिवस 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' आज अणुव्रत समिति गंगाशहर द्वारा बोथरा कन्या महाविद्यालय के प्रांगण में समणी निर्वाण प्रज्ञा एवम चैतन्य प्रज्ञा के सानिध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम प्रभारी राजेन्द्र बोथरा द्वारा मंगलाचरण से किया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में अणुव्रत समिति गंगाशहर के कार्यकर्ता, बोथरा गर्ल्स स्कूल, कॉलेज के शिक्षक और विद्यार्थीगण की उपस्थिति रही। स्वागत एवं परिचय वक्तव्य बोथरा गर्ल्स कॉलेज के प्रबंधक शांतिलाल बोथरा ने दिया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष करणी दान रांका ने बताया कि समणी निर्वाण प्रज्ञा ने अपने मंगल पाथेय में कहा कि 'संप्रदाय सिर्फ एक है मानव सम्प्रदाय और इसका धर्म सिर्फ एक है, मानवता। आचार्य तुलसी का यही मिशन था कि सम्पूर्ण राष्ट्र एक हो। इस हेतू ही उन्होंने अणुव्रत का प्रतिपादन किया। मानवता और नैतिकता इसके प्राण हैं। समिति के मंत्री एडवोकेट कन्हैयालाल बोथरा ने बताया कि समणी चेतन्य प्रज्ञा ने कहा कि 'हर संप्रदाय का उद्देश्य मानव को मानव से जोड़ना होना चाहिए। इसी से विश्व को वैमनस्य कि आग से बचा सकते हैं। प्रभारी हेमराज गुलगुलिया ने बताया कि अणुव्रत समिति, गंगाशहर के पदाधिकारी, सदस्य और महिला विंग के द्वारा कॉलेज प्रबंधक प्राचार्य और स्कूल प्रधानाचार्य का पताका पहनाकर और साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। साथ ही कॉलेज प्रबंधक और प्राचार्य ने अणुव्रत समिति को मोमेंटो भेंट कर सम्मान किया। प्रभारी आशीष गर्ग ने बताया कि 'इस अवसर पर अणुव्रत समिति गंगा शहर के अध्यक्ष करनीदान रांका आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन अणुव्रत समिति गंगाशहर के मंत्री एडवोकेट कन्हैया लाल बोथरा ने किया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम प्रभारी आशीष गर्ग ने किया।

राजकीय विद्यालय में नशा मुक्ति दिवस समारोह आयोजित

जसोल।

अणुव्रत समिति जसोल के तत्वावधान मे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अमरपुरा स्कूल जसोल मे आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी कुंदनप्रभाजी ठाणा 4 के सानिध्य मे 'नशा मुक्ति दिवस' समारोह कार्यक्रम आयोजित हुआ। सर्व प्रथम अणुव्रत समिती जसोल के प्रचार प्रसार मंत्री डुंगरचन्द बागरेचा ने मंगलाचरण अणुव्रत गीत का संगान संयम मय जीवन हो...। किया। स्वागत भाषण व अणुव्रत आचार सहिंता का वाचन अणुव्रत समिति अध्यक्ष महावीरचंद सालेचा प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति सलाहकार ईश्वरसिंह इन्दा ने कहा कि नशा आज के समय मे हमारे समाज और विशेषकर युवाओ के लिए एक दीमक की तरह बनता जा रहा है, युवा अक्सर तनाव (दोस्तो के दबाव) या गलत संगति के कारण इसकी शुरुआत करते है। शुरू शुरू मे यह शौक या मौज मस्ती लगता है, लेकिन बाद मे यह जानलेवा लत पर जाता है, इसलिए सभी विद्यार्थियों को संदेश देते हुए कहा कि नशा नही करना है। साध्वी किरणयशाजी ने अपने उद्बोधन मे कहा कि शारीरिक नुकसान नशा हमारे शरीर के मुख्य अंगों जैसे फेफड़े, लिवर, किडनी और दिमाग को पूरी तरह से नष्ट कर देता है, इससे कैंसर और दिल की बीमारियां जैसी गंभीर समस्याएं होती हैं। मानसिक असर ये हैं कि व्यक्ति को सोचने-समझने की शक्ति कम हो जाती है और वह तनाव या डिप्रेशन में चला जाता है। इसलिए सभी विद्यार्थियों को संदेश देते हुए कहा कि नशा जीवन भर नशा मुक्त रहेगे, सभी विद्यार्थियों संकल्प स्वीकार किया। साध्वी विद्युतप्रभा ने उद्बोधन मे कहा की - नशा केवल एक व्यक्ति को नही बल्कि उसके पूरे परिवार को बर्बाद कर देता। हँसते खेलते परिवार बिखर जाते है, मूल नशा अपने जीवन के लिए पढ़ाई, खेलो, कला और रचनात्मक कार्यो मे अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। शारीरिक शिक्षक प्रतापसिंह राव ने कहा की - नशा स्वास्थ्य के बहुत बहुत घातक है, नशे से जीवन की बर्बादी और पैसो नाश होता है व समाज मे इज्जत कम होती है। हर विद्यार्थियों को जीवन मे नशे से दूर रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने किया।

तप, जप और क्षमापना की पावन धारा: पर्युषण महापर्व पर आत्म-विशुद्धि के रंग में रंगा संपूर्ण तेरापंथ समाज!

पर्युषण पर्व के अवसर पर अखंड जाप एवं सामायिक का सफल आयोजन

उधना।

तेयुप उधना द्वारा पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर अखंड जाप का आयोजन निरंतर रूप से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस दौरान प्रतिदिन रात्रि 8 बजे से प्रातः 7 बजे तक सभी साथियों द्वारा श्रद्धा एवं भक्ति भाव से जाप किया गया। इस आयोजन के अंतर्गत कुल 349 सामायिक सम्पन्न हुईं, जो सभी सदस्यों की धार्मिक निष्ठा एवं अनुशासन का प्रतीक है। इस सम्पूर्ण आयोजन की सुचारू एवं सुव्यवस्थित व्यवस्था में गौतम भालावत, कमलेश बी. बाफना एवं मनीष भालावत का विशेष मार्गदर्शन एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिनके नेतृत्व में अखंड जाप अत्यंत अनुशासित एवं आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न हुआ। इस आध्यात्मिक आयोजन में परिषद के सभी सदस्यों एवं साथियों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

तेयुप उधना परिवार सभी सहभागी साथियों एवं प्रभारियों का हृदय से आभार व्यक्त करता है एवं प्रभु से मंगलकामना करता है कि सभी के जीवन में आध्यात्मिक उन्नति एवं शांति बनी रहे।

क्षमापना और आत्मशुद्धि का आध्यात्मिक पर्व

केसिंगा।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ परंपरा के पावन पर्युषण महापर्व के अवसर पर स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा में नौ दिवसीय 'पर्युषण महापर्व आराधना' कार्यक्रम का आध्यात्मिक एवं अनुशासित वातावरण में आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का पावन सान्निध्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमारजी एवं मुनि हेमंत कुमारजी का प्राप्त हुआ। पर्युषण महापर्व जैन धर्म में आत्मावलोकन, संयम, तप, स्वाध्याय, ध्यान, जप, प्रतिक्रमण एवं आत्मशुद्धि की साधना का विशेष पर्व माना जाता है। इसी भावना को केंद्र में रखते हुए केसिंगा में नौ दिनों तक विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों का क्रमबद्ध आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक दिन को विशेष आध्यात्मिक विषय के साथ मनाया गया। खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी संयम दिवस, अणुव्रत चेतना दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस, भगवती संवत्सरी महापर्व एवं क्षमापना दिवस के माध्यम से साधकों को जीवन में संयम और आत्मनिरीक्षण के विभिन्न आयामों से जोड़ा गया। प्रतिदिन धार्मिक कार्यक्रमों की नियमितता बनी रही। संध्या समय सामूहिक प्रतिक्रमण का आयोजन हुआ, वहीं रात्रि में प्रवचन के माध्यम से मुनिश्री ने धर्म, संयम, आत्मचिंतन, कर्म सिद्धांत एवं जीवन में आध्यात्मिक चेतना के महत्व पर मार्गदर्शन प्रदान किया। श्रद्धालुओं ने नियमित रूप से इन कार्यक्रमों में सहभागिता कर पर्युषण की आराधना को जीवन से जोड़ने का प्रयास किया।

अठाई एवं तप साधना में दिखा उत्साह

पर्युषण के दौरान अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी सामर्थ्य एवं श्रद्धा के अनुसार विभिन्न तपस्याओं का संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंतर्गत उपवास, एकासन, बियासन, अठाई तथा अन्य तप-अनुष्ठानों में सहभागिता हुई। इसके साथ ही साधकों को क्रोध को शांत रखने, मौन साधना, प्रतिदिन सामायिक करने तथा नियमित रूप से तीनों समय प्रवचन सुनने जैसे संकल्पों के लिए प्रेरित किया गया। विशेष रूप से ई-अठाई के माध्यम से मोबाइल एवं टीवी जैसे डिजिटल माध्यमों से संयम रखने का संदेश भी दिया गया।

पर्युषण आराधना के दौरान अखंड जाप में सहभागिता, विभिन्न प्रकार के तप-अनुष्ठान, संवत्सरी के दिन उपवास एवं पौषध तथा रात्रि संवर जैसे विशेष उपक्रम भी आयोजित किए गए। इन उपक्रमों का उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित न रहकर साधना एवं संयम को दैनिक जीवन में उतारना रहा। पर्युषण महापर्व के सबसे महत्वपूर्ण दिवस भगवती संवत्सरी पर विशेष धार्मिक आयोजन हुआ। इस दिन प्रातः 9:00 बजे से संध्या 4:15 बजे तक विस्तृत प्रवचन एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम चला। मुनिश्री के सान्निध्य में संवत्सरी की आराधना, आत्मावलोकन एवं क्षमापना की भावना को विशेष रूप से अभिव्यक्त किया गया। संवत्सरी के अवसर पर लगभग 106 पौषध हुए रहा।

युगदृष्टा के पावन जीवन और सिद्धांतों को भावांजलि

सत्य, अहिंसा और स्वाभिमान का अमर संदेश

● मोहन भन्साली ●

दांडी यात्रा के प्रणेता ने अंग्रेजों को ललकारा था,
अहिंसा के पुजारी ने आजादी का बिगुल बजाया था!
मानवीय मूल्यों के विचारक ने जन-जन को जगाया था,
2 अक्टूबर को जन्में गांधी का जीवन संयम प्रदान था।।
अहिंसा के पुजारी ने आजादी का...

महान् दार्शनिक ने शांति का पाठ पढ़ाया था,
अंधियारी गलियों में दीप से दीपक जलाया था,
स्वप्नदृष्टा ने तपस्विनी कस्तूरबा का साथ पाया था,
वतन का सारथी! चहुंओर जगत में जगमगाया था।।
अहिंसा के पुजारी ने आजादी का...

स्वदेशी के प्रचारक ने खादी को अपनाया था,
स्वाभिमानी ने स्वच्छ भारत का सोपान सजाया था,
सत्याग्रह के राही ने हिंद माटी का तिलक लगाया था,
जन-मानस का हृदय सम्राट !राष्ट्रपिता बापू कहलाया था।
अहिंसा के पुजारी ने आजादी का...

क्रान्तिकारी महात्मा ने संतता का जीवन जीया था,
सहनशील श्रमवीर ने सहिष्णुता का श्रृंगार किया था,
चरखा चालक ने नवनीत कीर्तिमान स्थापित किया था,
राम का अनुयाई गांधी! अजर अमर बलिदानी था।।
अहिंसा के पुजारी ने आजादी का...

अहिंसा के पुजारी ने आजादी का बिगुल बजाया था!
अहिंसा दिवस पर सादर समर्पित

दायित्व बोध और सजगता से ही संभव है जीवन निर्माण

चेन्नई।

केल्लीस में विराजित साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 40 प्रशिक्षिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

'IT'S BETTER TO SLEEP THAN TO SLIP' कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी संगीत प्रभा जी ठाणा के मंगल उद्बोधन से हुआ। उन्होंने कहा कि हम सभी अपने जीवन में कभी प्रशिक्षक तो कभी विद्यार्थी की भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने मां और सास की तुलना एक

संस्कार निर्माण विषय पर विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित

प्रशिक्षक से करते हुए कहा कि जिस प्रकार एक मां अपने बच्चे को पाल-पोसकर बड़ा करती है, उसी प्रकार एक सास अपनी बहू को परिवार एवं घर की जिम्मेदारियां निभाना सिखाती है।

उन्होंने शिक्षा और ज्ञान के बीच के अंतर को भी सरल एवं प्रभावी ढंग से समझाया। साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 ने अपने मंगल उद्बोधन में सभी प्रशिक्षिकाओं की सराहना करते हुए कार्यशाला के विषय 'स्लिप होने से बेहतर है नींद ले लेना'– के दोनों पहलुओं को समझाया। उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य को करने से पहले ही डरकर पीछे हट जाने से बेहतर है कि ठोकर खाकर भी आगे बढ़ा जाए।

उन्होंने सभी को दायित्व-बोध की भावना को समझने तथा अपने दायित्वों का सजगता एवं समर्पण के साथ निर्वहन करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में ज्ञानशाला प्रशिक्षिका अनीता चोपड़ा द्वारा शिशु संस्कार बोध भाग 1 से 5 पूर्ण करने वाली सभी प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया।

ज्ञानशाला परिवार की ओर से साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 के प्रति अनंत कृतज्ञता। आपके अमूल्य मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ सम्पूर्ण ज्ञानशाला परिवार को सदैव मिलता रहे, ऐसी मंगलकामना।

आद्यप्रवर्तक के चरणों में भावांजलि: चरमोत्सव पर देश भर में गूँजी भिक्षु-भक्ति और गुरु-समर्पण की पावन लहर!

आद्य प्रवर्तक स्वामीजी पर धम्म जागरण

नागपुर।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक, क्रातिकारी आचार्यश्री भिक्षु स्वामी के 224 वें चरमोत्सव के पावन अवसर पर नागपुर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एंव तेरापंथ युवक परिषद द्वारा भिक्षु धम्म जागरण का भव्य आयोजन किया गया।

यह आयोजन भाद्रपद शुक्ल तेरस के उपलक्ष्य में नागपुर अणुव्रत भवन में आयोजित हुआ।

भक्ति, जप और विचारों से सराबोर हुई संध्या

कार्यक्रम का शुभारंभ ॐ भिक्षु - जय भिक्षु के सामूहिक जाप के उच्चारण से हुआ। आचार्यश्री भिक्षु के चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित की एंव आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया। इस गौरवशाली अवसर पर चारों संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारी, प्रबुद्ध जन और अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एंव कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। तत्पश्चात नागपुर स्वर लहरी के गायको द्वारा तेरस धम्म जागरण का कार्यक्रम जय घोष नारे के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

नैतिक और बौद्धिक विकास हेतु परीक्षा सम्पन्न

गांधीनगर, बेंगलुरु।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, गांधीनगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में, साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में विज्ञ, विशारद एवं स्नातक की ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की लिखित परीक्षा का सफल आयोजन किया गया। परीक्षा का शुभारंभ साध्वी पावनप्रभा जी के मंगल पाठ से हुआ।

इस अवसर पर साध्वी उन्नतयशा, साध्वी आत्मयशा एवं साध्वी रम्यप्रभा जी का भी पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जुगराज श्रीमाल एवं ज्ञानशाला प्रभारी प्रकाश कटारिया ने निरीक्षण हेतु उपस्थित होकर परीक्षा की व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। इस लिखित परीक्षा में कुल 25 बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह परीक्षा प्रशिक्षिकाओं के ज्ञान, समर्पण एवं शिक्षण कौशल को परखने के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक एवं बौद्धिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रही। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ भावी पीढ़ी में संस्कार, नैतिक मूल्यों एवं जैन दर्शन के बीज रोपित करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाती हैं। ऐसी परीक्षाएँ उनके ज्ञान को परिष्कृत करने, आत्मविश्वास बढ़ाने तथा ज्ञानशाला के शैक्षणिक स्तर को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

संस्कारों के रोपण में प्रशिक्षिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

पृष्ठ 1 का शेष

स्वर्ग की चाह नहीं...

संथारे से जीव को भव भ्रमण से मुक्ति मिल जाती है। आहार का त्याग कर देने से भीतर के अध्यवसायों में ममत्व मुक्ति का भाव आ जाने से भव भ्रमण का परिसीमन हो जाता है।

अपश्चिम मारणांतिक संलेखना और जीवन-संध्या का पाथेय–

१. तीसरा मनोरथ व मोक्ष भावना : चारित्रात्माओं और श्रावकों दोनों का तीसरा मनोरथ 'अपश्चिम मारणांतिक संलेखना' समान है। मन में यह भाव रहे कि अनशन की अवस्था में ही प्राण व्युत्सर्ग हों। कोई बाह्य आकर्षण जैसे देवलोक आदि की कामना न हो, एकमात्र मोक्ष की भावना ही मन में रहे।

२. जीवन-संध्या का नियोजन : यह भी संभव है कि संथारा लेने का मौका न मिले, अतः अंतिम समय जैसे ७० या ८० की उम्र में गृहस्थ हो या साधु, अपने आप को धर्म साधना में नियोजित करने का प्रयास करें। भावों की शुद्धि रहे और संवर व निर्जरा की साधना खूब अच्छी चले।

३. वृद्धावस्था व गृहस्थों का चिंतन : वृद्धावस्था की स्थिति में जब शरीर कमजोर हो जाए तो अपना समय धर्म-ध्यान में लगाने का प्रयास करें। गृहस्थों का यह चिंतन रहे कि अधिक से अधिक त्याग प्रत्याख्यान करें, सामायिक करें। परिग्रह का अल्पीकरण, चोरी का त्याग, झूठ बोलने का जितना संभव हो सके त्याग करने का प्रयास करना चाहिए।

'संघ परामर्शक' मुनि मधुकरजी स्वामी का स्मरण एवं तप प्रत्याख्यान–

१. मुनि मधुकरजी स्वामी को श्रद्धांजलि: आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया कि आज आश्विन शुक्ला द्वितीया है और मुनि मधुकरजी स्वामी के प्रयाण की वार्षिक तिथि है। मुनि मधुकरजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के विशिष्ट मुनि रहे हैं। मुनिश्री ने गुरुदेव तुलसी की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया था पूज्यश्री ने उनकी स्मृति करते हुए मंगलकामना की कि मुनिश्री की आत्मा जहाँ भी हो, खूब शांति और समाधि में रहे और जल्दी ही मोक्ष श्री का वरण करे।

२. तप प्रत्याख्यान : साध्वी स्मितप्रभा जी ने पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से २८ दिनों की तपस्या (मासखमण) का प्रत्याख्यान ग्रहण कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

न कोई खड़को...

4. संस्कृत में ज्ञान-चर्चा और स्मृतियाँ: मुनि दिनेशकुमार जी, मुनि जिनेशकुमार जी और धर्मरुचि स्वामी एक साथ मुनि मधुकर जी के पास आए थे। उन्होंने याद किया कि उस दौरान गुरुदेव और मुनि मधुकर जी के बीच अक्सर संस्कृत में गंभीर वार्तालाप होता था, जिसे सुनना भी अपने आप में एक महान अनुभव था। मुनि श्री दिनेशकुमार जी ने भावुक होकर कहा कि मुनि मधुकर जी के गुणों का जितना बखान किया जाए, उतना कम है।

सार संदेश : "सच्ची सेवा वह है जो बिना किसी शोर-शराबे के केवल गुरु-चरणों में समर्पित हो जाए—और मुनि मधुकर जी इसी निष्काम सेवा के अनूठे प्रतीक थे।"

बोलती किताब

अणुव्रत के 11 नियम

अहिंसा और विश्व शांति का संदेश



आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित 'अणुव्रत के 11 नियम' अणुव्रत आंदोलन की आचार-संहिता को सरल ढंग से समझाने का प्रयास है। अणुव्रत को केवल किसी एक धर्म या संप्रदाय तक सीमित नहीं माना गया है। इसका आधार आत्मानुशासन और संयम है। पुस्तक के अनुसार व्यक्ति अपनी धार्मिक मान्यताओं को बनाए रखते हुए भी अणुव्रत के नियमों को अपना सकता है। इसका उद्देश्य मनुष्य के जीवन में नैतिकता और मानवीय शुचिता को मजबूत करना है।

अणुव्रत के प्रारंभिक नियम अहिंसा और शांति की भावना को मजबूत करते हैं। इनमें किसी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध न करने, आत्महत्या और भ्रूणहत्या से बचने का संदेश दिया गया है। साथ ही आक्रमणकारी नीति का समर्थन न करने और विश्व शांति के लिए प्रयास करने की प्रेरणा दी गई है। पुस्तक में हिंसात्मक और तोड़-फोड़ वाली गतिविधियों से दूर रहने पर भी जोर दिया गया है। विरोध की स्थिति में भी अहिंसात्मक रास्ता अपनाने की बात कही गई है।

अणुव्रत का एक महत्वपूर्ण पक्ष मानवीय एकता और धार्मिक सहिष्णुता है। जाति, रंग या किसी अन्य आधार पर किसी व्यक्ति को ऊंचा-नीचा मानने और अस्पृश्यता की भावना रखने से बचने की प्रेरणा दी गई है। अलग-अलग धर्म और संप्रदायों का सम्मान करते हुए साम्प्रदायिक उत्तेजना न फैलाने का संदेश दिया गया है। पुस्तक में यह विचार सामने आता है कि विभिन्नताओं के बावजूद मानवता के स्तर पर सभी में एकता देखी जा सकती है। आपसी मैत्री और सद्भाव समाज को स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अणुव्रत के आगे के नियम नशामुक्ति और पर्यावरण संरक्षण जैसे जीवन से जुड़े विषयों पर केंद्रित हैं। व्यसनमुक्त जीवन जीने तथा मादक और नशीले पदार्थों से दूर रहने का स्पष्ट संदेश दिया गया है। इसके साथ हरे-भरे वृक्षों की रक्षा, पानी और बिजली के अनावश्यक उपयोग से बचने तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी गई है। समग्र रूप से अणुव्रत व्यक्ति को संयम, अहिंसा, नैतिकता और जिम्मेदारी के साथ जीवन जीने की दिशा दिखाता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

तीर्थंकरों की भक्ति और आत्मिक ऊर्जा का संचार

इरोड।

साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापन्थ सभा भवन में 'पच्चीस कंठी रक्षा कवच दिव्य अनुष्ठान ' एक दिव्य अनुष्ठान करवाया गया । इसमें तीर्थंकर जप एवं स्तुति के साथ अपने रक्षा कवच का सृजन है। इस अनुष्ठान से भाई - बहनों ने आत्मिक शांति , मानसिक स्थिरता और आध्यात्मिक ऊर्जा का गहन अनुभव किया। साध्वी ने नमस्कार महामंत्र से संकल्पों के साथ अनुष्ठान का शुभारंभ किया। 24 तीर्थंकरों की स्तुति से युक्त एक अद्भुत अनुष्ठान बताया। आत्म जागरण का जैन साहित्य में 24 तीर्थंकरों का जीवन चरित्र पूरे विस्तार के साथ वर्णित है। तीर्थंकर जैसा बोलते है वैसा ही करते है। और जैसा करते है वैसा ही बोलते है। इसीलिए उनके जीवन में किसी प्रकार की विसंगति नहीं होती है। जिस परिसर में अर्हंत् देव विराजमान रहते है । वहा से 125 योजन तक में ज्वर रोग, विरोध, भतिवृष्टि, अनावृषटि, उत्रिसी आदि नहीं होती है। इसीलिए वे जन - जन के तारक है। त्रिलोकीनाथ है। महामानव है। पुरुषोत्तम है। विभिन्न अतिशयों से युक्त है। उनका बताया हुआ मार्ग किसी समुदाय विशेष के लिए नहीं है। अपितु सर्वजन हिताय है। इरोड के सभी भाई - बहनों ने बड़े उत्साह से इस अनुष्ठान में भाग लिया।

पृष्ठ 2 का शेष

काया की स्थिरता...

यदि मन की चंचलता को कम करना है, तो साधक को सबसे पहले शरीर की चंचलता रोकने का अभ्यास करना चाहिए। शरीर की स्थिरता स्वयं ध्यान का एक सशक्त आयाम है।

२. कायगुप्ति का स्वरूप : प्रेक्षाध्यान के प्रथम चरण कायोत्सर्ग में स्थिरता, शिथिलता और जागरूकता ही मुख्य हैं। शरीर को हिंसा, प्रमाद और अशुभ योगों से मुक्त रखना, तथा हाथों, पैरों, इन्द्रियों व वाणी का संयम ही वास्तविक कायगुप्ति है।

अनुशासन पर्व (हाजरी) और धर्मसंघीय मर्यादाएँ–

१. एक आचार्य की आज्ञा में निष्ठा : आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आज हाजरी व अनुशासन पर्व का दिन है। आद्यप्रवर्तक स्वामी भिक्षु ने धर्मसंघ में मर्यादाएँ स्थापित की थीं, जिनमें सर्वोच्च यह है कि समस्त साधु-साध्वियाँ एक ही आचार्य की आज्ञा में रहें। विहार, चातुर्मास आचार्य-आज्ञा से ही करें और स्वयं शिष्य न बनाएँ।

२. श्रमण परंपरा की सम्यक् आराधना : पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जो मुनि महाव्रतों व मर्यादाओं का प्रामाणिकता से पालन करता है, वही श्रमण परंपरा की सच्ची आराधना करता है। साधु-साध्वियों को सदैव चित्त समाधि में रहते हुए धर्मसंघ के गौरव के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

लेखपत्र वाचन व धार्मिक प्रस्तुतियाँ–

१. लेखपत्र उच्चारण व बख्शीश : गुरुदेव की अनुज्ञा से मुनि हितकरजी व मुनि बालयोगीजी ने वार्षिक लेखपत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने मुनिद्वय को ३-३ कल्याणक की बख्शीश प्रदान की। तीन नई समणियों द्वारा समणी संबंधी पत्र का वाचन करने पर उन्हें २१ लोगस्स पाठ की बख्शीश मिली। तत्पश्चात समस्त चारित्रात्माओं ने सामूहिक रूप से खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

२. श्रद्धांजलि व संगान : कार्यक्रम में राणावास संस्थान के अध्यक्ष मोहनलाल गादिया ने अपने श्रद्धाभाव व्यक्त किए। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने सुमधुर गीत का संगान कर पूज्य गुरुदेव के चरणों में अपनी भावनाएँ समर्पित कीं।

योग प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्यप्रवर की आगमिक देशना

अर्हत् वंदना और काय स्थिरता से साधें मन-काया की एकाग्रता' : आचार्यश्री महाश्रमण

धर्मसंघ ने अर्हत वंदना के साथ किया काय स्थिरता का प्रायोगिक अभ्यास

लाडनूं।
08 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में धर्मसंघ को आध्यात्मिक गहराई से ओतप्रोत करने वाला पावन पाथेय प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर ने 'योग प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' विषय पर अत्यंत दार्शनिक और आगमिक उद्बोधन प्रदान करते हुए योग, संवर और अयोग अवस्था के रहस्यों का उद्घाटन किया।



योग का शाब्दिक व जैन दर्शन में पारिभाषिक स्वरूप–

१. अनेकार्थक योग और आचार्य हेमचंद्र का कथन : पूज्यप्रवर ने मंगल प्रवचन में फरमाया कि 'योग' शब्द अनेकार्थक है और साधना के संदर्भ में भी व्यवहृत होता है। आचार्य हेमचंद्र के अनुसार मोक्ष का उपाय योग है, जिसका स्वरूप ज्ञानात्मक, श्रद्धानात्मक और चारित्रणात्मक होता है। संपूर्ण धर्म साधना योग है क्योंकि यह आत्मा को मोक्ष से जोड़ती है।

२. शारीरिक, वाचिक और मानसिक प्रवृत्ति : जैन दर्शन में 'योग' एक पारिभाषिक शब्द है, जिसके अंतर्गत शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति को योग कहा गया है। प्रवृत्ति चाहे आस्तिक करे, नास्तिक करे या कोई भी जीव मात्र करे, वह योग ही है। तत्त्व की दृष्टि से स्थावर जीवों में केवल काय योग, विकलेन्द्रियों में काय व वचन योग, तथा देवों, नारकों, संज्ञी मनुष्य व पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में मन, वचन और काया तीनों योग होते हैं।

३. संज्ञी प्राणियों की महत्ता : मन वाले (संज्ञी) प्राणी ही सबसे ज्यादा धर्म और सबसे ज्यादा पाप कर सकते हैं, जो विकलेन्द्रिय या स्थावर जीव नहीं कर सकते। सातवीं नरक जाने से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक का सामर्थ्य संज्ञी मनुष्य में ही होता है।

योग प्रत्याख्यानः योग से अयोग की ओर यात्रा–

१. अयोगवस्था और चौदहवां गुणस्थान : आचार्यश्री ने समझाया कि 'योग प्रत्याख्यान' का अर्थ है योग से अयोग की ओर आगे बढ़ना— अर्थात मन, वचन और शरीर की प्रवृत्ति का पूर्ण निरोध, क्योंकि जब तक योग रहेगा, मोक्ष नहीं मिलेगा। अयोग संवर की पूर्ण अवस्था मात्र चौदहवें गुणस्थान में प्राप्त होती है।

> मन, वचन और शरीर की चंचलता को रोकना ही आंशिक अयोग साधना का मार्ग है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

२. शैलेषी अवस्था व अकर्मबंध : चौदहवें गुणस्थान में किसी भी प्रकार की प्रवृत्ति न होने के कारण 'अबंध' अवस्था रहती है और जीव मेरु पर्वत की भाँति अकंप, 'शैलेषी अवस्था' को प्राप्त कर लेता है। यहाँ मन, वचन और काया की चंचलता पूर्णतया समाप्त हो जाती है, शुक्ल ध्यान की पराकाष्ठा में पूर्ण स्थिरता होती है और नए कर्मों का बंध रुककर पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा से जीव अल्पकाल में सिद्धत्व को प्राप्त हो जाता है।

आंशिक योग प्रत्याख्यान और अर्हत् वंदना का प्रायोगिक अभ्यास–

१. आंशिक साधना का प्रयोग : पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यद्यपि चौदहवें गुणस्थान की पराकाष्ठा अनंत जन्मों में एक बार अति अल्पकाल के लिए आती है, किंतु हम आंशिक योग प्रत्याख्यान बार-बार कर सकते हैं। शरीर, वाणी और मन की चंचलता को स्थूल रूप से रोकने का प्रयास कर अयोग की आंशिक साधना की जा सकती है।

२. काय स्थिरता का प्रयोग : आचार्यश्री ने वंदनासन में बैठकर मेरुदंड और गर्दन सीधी रखकर, हाथों को स्थिर और आँखें बंद कर आगम के पाठों के वाचन को काय स्थिरता का सुंदर प्रयोग बताया। पूज्यप्रवर के निर्देश पर सभा में उपस्थित संघ ने भावभीनी वंदना के संगान के साथ इसका प्रायोगिक अभ्यास भी किया, जिससे निर्जरा का उत्तम लाभ प्राप्त होता है।

'अर्हत वंदना: सिर्फ औपचारिक नमन नहीं, आत्म-विशुद्धि की अचूक कुंजी!'

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि अर्हत वंदना में व्यतीत समय केवल औपचारिकता न बनकर ध्यान और कर्म-निर्जरा का माध्यम बन सकता है। अर्हत वंदना का सही तरीका और मुख्य बिंदु–

1. **कायिक स्थिरता:** वंदनासन में बैठें, मेरुदंड (रीढ़ की हड्डी) और गर्दन को सीधा रखें।
2. **पूर्ण एकाग्रता :** हाथों की स्थिरता बनाए रखें और मन को भटकने न दें। वंदना के समय पूर्ण तल्लीनता आवश्यक है।
3. **दृष्टि संयम :** ध्यान को एकाग्र रखने के लिए आंखों को स्थिर रखें या बंद कर लें।
4. **भावपूर्ण वंदना :** 'भावभीनी वंदना...' केवल पाठ बोलना पर्याप्त नहीं है, बल्कि भगवान के गुणों का चिंतन करते हुए भीतर शुद्धता व निर्मलता का अनुभव करना अनिवार्य है।
5. **ऐतिहासिक संदर्भ :** अर्हत वंदना का यह क्रम युगप्रधान आचार्य तुलसी के समय प्रारंभ हुआ था। कालान्तर में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के समय इसमें 'श्रद्धा स्वीकारो' का पावन सूत्र जोड़ा गया। यह हमारे धर्मसंघ का एक महत्वपूर्ण सामूहिक अनुष्ठान है, जिसमें प्रत्येक श्रावक-श्राविका को सक्रिय रूप से सहभागी बनना चाहिए।

आचार्य श्री के पावन कंठ से झरा 'भावभीनी' का अमृत

जब आचार्य प्रवर के श्रीमुख से यह पावन गीत के स्वर फूटे, तो पूरा वातावरण मानो दिव्यता और शांति के समंदर में डूब गया। यह रचना केवल शब्दों की श्रृंखला नहीं है, बल्कि हर साधक के भीतर सोई हुई चेतना को झकझोर कर जगा देने वाली एक अंतरात्मा की पुकार है—

भाव भीनी वंदना भगवान चरणों मे चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय, रुप अपने आप पाएं ॥
ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा मे, लक्ष्य तरुवर लहलहाएं ॥1॥
सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्धकर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएं ॥2॥
बिन्दु भी हम सिन्धु भी है, भक्त भी भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रंथियों को, सुप्त-चेतन को जगाएं ॥3॥
धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय में, स्रोत समता का बहाएं ॥4॥

आंतरिक अनुभूति: यह गीत हमें याद दिलाता है कि हम बाहर क्या तलाश रहे हैं? हम खुद ही बिंदु भी हैं और सिंधु भी। जब भीतर का संशय मिटता है और आचरण की धरती पर समता का झरना बहता है, तभी जीवन की असली सार्थकता खिल उठती है।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां







अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 अक्टूबर - 25 अक्टूबर 2026

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का 'जीवन विज्ञान दिवस' के साथ भव्य समापन

'ज्ञान के साथ संस्कारों की शिक्षा ही बनाती है जीवन को श्रेष्ठ' : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर का संदेश: 'अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान का मिश्रित रूप है जीवन विज्ञान'

लाडनूं।
07 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में जैन विश्व भारती परिसर की सुधर्मा सभा में 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' के समापन अवसर पर 'जीवन विज्ञान दिवस' का गरिमामय आयोजन हुआ।

ज्ञान का विकास और शिक्षा का महत्त्व–

१. चिंतन और निर्णय क्षमता का आधार : पूज्यप्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन में फरमाया कि शिक्षा जीवन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जीवन में ज्ञान का विकास रहने से मनुष्य विवेकशील, अच्छी चिंतनशैली और प्रखर निर्णय क्षमता वाला बनता है। २. वर्तमान शिक्षा परिदृश्यः आचार्यश्री ने फरमाया कि आज दुनिया में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय हैं जहाँ विद्यार्थी विद्या अर्जन कर रहे हैं। साधु-समुदाय में ज्ञान व शिक्षा की अविरल परंपरा विद्यमान है, वहीं गृहस्थ समाज में भी शिक्षा की सुंदर व्यवस्थाएँ संचालित हैं। वर्तमान समय में अतीत की तुलना में शिक्षा की उत्तम व्यवस्थाएँ हैं और लोगों का शिक्षा के प्रति रुझान भी बढ़ा है।

जीवन विज्ञान : अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान का अनूठा संगम और संस्कारित शिक्षा–

१. असांप्रदायिक व लोक कल्याणकारी उपक्रम : पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान का समन्वित रूप ही 'जीवन विज्ञान' है। यह हमारे धर्मसंघ का लोक कल्याणकारी, व्यापक और असांप्रदायिक कार्यक्रम है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा जगत में केवल बौद्धिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान करना है।

२. भावों पर नियंत्रण और विकृतियों का शमन : जीवन विज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों का भावनात्मक विकास करना और क्रोध, अहंकार

> शिक्षा से ज्ञान का विकास होता है, लेकिन जीवन विज्ञान से जीवन में संस्कारों का निर्माण होता है
> –आचार्यश्री महाश्रमण

जैसी मानसिक विकृतियों पर नियंत्रण पाना प्रमुख लक्ष्य है। साधु-साध्वीवृंद बहिर्विहार के दौरान या सामान्य समय में विद्यालयों व जेलों आदि में कहानियों, दृष्टान्तों, महाप्राण ध्वनि और योगाभ्यास के प्रयोगों द्वारा बालकों में सहजता से अच्छे संस्कारों का बीजारोपण कर सकते हैं।

३. शिक्षा के तीन प्रमुख आयाम : आचार्यश्री ने शिक्षा के तीन प्रमुख आयामों को रेखांकित करते हुए फरमाया कि पहला आयाम विश्वविद्यालयीन शिक्षा (जैसे B.A., M.A., Ph.D. आदि) है, दूसरा संघीय पाठ्यक्रम 'महाप्रज्ञ श्रुताराधना' है, तथा तीसरा महिला मंडल द्वारा संचालित 'तत्त्वज्ञान' का पाठ्यक्रम है।

विद्यार्थियों द्वारा महाप्राण ध्वनि की प्रस्तुति व संकल्प ग्रहण–

१. संस्कारों का बीजारोपण : कार्यक्रम में सेठ सूरजमल भूतोड़िया राजकीय कन्या विद्यालय एवं सुभाष चंद्र बोस इंग्लिश मीडियम स्कूल के छात्र-छात्राएँ तथा शिक्षकगण उपस्थित रहे। विद्यार्थियों ने भावपूर्ण अणुव्रत गीत का संगान किया तथा प्रार्थना सभा में होने वाले जीवन विज्ञान के उपक्रम 'महाप्राण ध्वनि' आदि की सुंदर प्रस्तुति दी।

२. अणुव्रत संकल्प त्रयी का स्वीकार : पूज्यप्रवर की प्रेरणा से विद्यार्थियों ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की संकल्प त्रयी को सहर्ष स्वीकार कर 'जीवन विज्ञान दिवस' के उद्देश्य को सार्थक किया।

English भाषा में सार-संक्षेप–

१. अंगेजी भाषा में प्रवचन सार: मुख्य प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री के इंगित पर **मुनि योगेश कुमार जी** ने अंग्रेजी भाषा (English) में कहा 'Jeevan Vigyan bridges moral philosophy with practical discipline. Anuvrat instills ethical values, while Preksha Dhyan puts them into action. Through simple techniques like Mahapran Dhwani, which vibrates memory-related neurons, it sharpens focus and unlocks human potential.' पूज्यश्री के पावन सम्बोधन का सुंदर सार प्रस्तुत किया। तत्पश्चात **मुनि आर्ष कुमार जी** ने भी अति संक्षेप में अंग्रेजी भाषा में भाव प्रस्तुत करते हुए कहा 'Jeevan Vigyan works at the deepest psychological levels to overcome Anger, Pride, Deceit, and Greed. Its practical tools transform habits and prioritize character building, making it a sacred legacy for universal peace and individual growth.

4 कड़वे सच, जो बदल देंगे आपका जीवन!

आचार्य श्री ने 'जीवन विज्ञान' के मूल मर्म को अत्यंत सरलता और स्पष्टता के साथ समझाया।

1. किताबी ज्ञान नहीं, आचरण का विज्ञान : आचार्य जी ने स्पष्ट किया कि जीवन विज्ञान केवल किताबों तक सीमित ज्ञान नहीं, बल्कि आचरण का विज्ञान है। उन्होंने इसे एक सरल महामंत्र में पिरोया– **'बुरा मत देखो • बुरा मत सुनो • बुरा मत बोलो • बुरा मत सोचो • बुरा मत करो'**

2. सकारात्मकता ही असली 'आत्मा' : उन्होंने विद्यार्थियों और जनसामान्य को हमेशा सकारात्मकता अपनाने की प्रेरणा दी। आचार्य जी ने फरमाया कि बुराई के त्याग के साथ–हमेशा अच्छा सुनना, देखना, बोलना, सोचना और अच्छा काम करना–यही जीवन विज्ञान की वास्तविक 'आत्मा' है।

3. संस्कार निर्माण का सरल मार्ग: यह कोई कठिन या जटिल विद्या नहीं, बल्कि दैनिक व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाने का सरल तरीका है। यह संस्कार निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम है, जिसे बच्चे आसानी से अपने जीवन का हिस्सा बना सकते हैं।

4. अंतिम लक्ष्य–स्वभाव परिवर्तन : आचार्यजी ने 'स्वभाव परिवर्तन' को जीवन विज्ञान का अंतिम लक्ष्य बताया है, जहाँ व्यक्ति अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से स्वयं को निरंतर बेहतर बनाता है।



7 PhDs एक तरफ, जयाचार्य जी का ज्ञान एक तरफ!

पूज्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु और जयाचार्य जी के अगाध आगम-ज्ञान का उल्लेख करते हुए वास्तविक विद्वता का मर्म फरमाया।

1. बिना डिग्री के अगाध ज्ञान: पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आचार्य भिक्षु, जयाचार्य जी और मुनि हेमराज जी के पास कोई आधुनिक 'डिग्री' (MA, PhD) नहीं थी, फिर भी उनका आगम और तत्वज्ञान इतना विशाल था कि आज के डिग्रीधारी विद्वान उनके सामने नगण्य प्रतीत होते हैं।

2. 7 PhDs से भी बड़ा आगम-ज्ञान : आचार्य श्री ने उदाहरण देते हुए फरमाया कि यदि आज के 7 पीएचडी धारक भी एक साथ बैठ जाएँ, तो भी वे जयाचार्य जी के अगाध आगम-ज्ञान की बराबरी नहीं कर सकते।

3. 'प्रोफेसर' शब्द भी छोटा : उन्होंने कहा कि आज की शब्दावली में उन्हें केवल 'प्रोफेसर' कहना उनके ज्ञान के साथ न्याय नहीं होगा; उनका पांडित्य किसी भी आधुनिक शैक्षणिक मानक से कहीं ऊँचा था।

4. साधना और चिंतन का बल: उस समय की शिक्षा पद्धति भले ही डिग्रियों वाली नहीं थी, लेकिन साधना, गहरे अध्ययन और चिंतन पर आधारित वह प्रणाली स्वयं में विशिष्ट ज्ञान का सर्वोच्च मानक थी।

'90 साल पहले का वो दौर... और आज यूनिवर्सिटीज में गूंजती आवाज़!'

पूज्य प्रवर ने शिक्षा के क्षेत्र में आए सकारात्मक बदलावों और साधु-साध्वी समुदाय की शैक्षणिक प्रगति पर विस्तार से चर्चा की–

1. शिक्षा का तुलनात्मक विकास (90 साल का सफर) : आचार्यश्री ने 90 वर्ष पहले और वर्तमान समय की तुलना करते हुए बताया कि उस समय साधु-साध्वी समुदाय में अंग्रेजी भाषा, आधुनिक डिग्री (जैसे MA, डॉक्टरेट) या शैक्षणिक संस्थानों में जाकर भाषण देने की परंपरा न के बराबर थी।

2. आधुनिक शिक्षा और साधु-साध्वी (विशिष्ट बदलाव) : आज के समय में साधु-साध्वी और समणियों का शैक्षणिक स्तर काफी विकसित हुआ है। अब वे न केवल उच्च शिक्षित हैं, बल्कि अंग्रेजी में संवाद करने, शोध करने और शिक्षण (Teaching) जैसे क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि आज हमारे बीच अनेक डॉक्टरेट, सीए (CA), और वकील हैं, जो एक बड़ा परिवर्तन है।

3. गुरुदेव तुलसी का ऐतिहासिक योगदान : आचार्यश्री ने विशेष रूप से गुरुदेव तुलसी के प्रयासों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार परम पूज्य कालूगणी के समय से चली आ रही मर्यादाओं के बीच, गुरुदेव तुलसी ने शिक्षा के महत्व को समझा और साध्वी समुदाय में आधुनिक शिक्षा और अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को प्रोत्साहित किया।

4. भाषण और ज्ञान-प्रसार (बड़ी उपलब्धि) : साध्वियों द्वारा अब कॉलेज, यूनिवर्सिटी और स्कूलों में जाकर हिंदी व अंग्रेजी में भाषण देना और ज्ञान का प्रसार करना, समाज के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।